



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

नवीन पूर्वाचल शंदेश वार्षिक पत्रिका

17वाँ अंक : 2022

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

मेघालय, शिलांग - 793001

फैक्स संख्या : 0364-2223103

ई-मेल : agaemeghalaya@cag.gov.in

दिनांक 14 एवं 15 सितम्बर 2022 को पंडित दीनदयाल उपाध्याय इंडोर स्टेडियम, सूरत (गुजरात) में आयोजित हिन्दी दिवस समारोह 2022 एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के पावन अवसर की कुछ झलकियाँ।

"नवीन पूर्वाचल संदेश"
वार्षिक पत्रिका : 17 वां अंक

वर्ष : 2022-23

पत्रिका परिवार

संरक्षक	:	श्री फ्रेडरिक सिम्लेह महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग
प्रधान संपादक	:	डॉ. डी. अनिश वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
परामर्शदाता	:	श्री आनंद कौशल, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
संपादक मंडल	:	श्रीमती स्निग्धा फुकन, हिंदी अधिकारी
	:	श्री अशोक कुमार, वरिष्ठ अनुवादक
	:	श्रीमती राजलक्ष्मी गांगुली, वरिष्ठ अनुवादक
	:	श्रीमती प्रिया साव, कनिष्ठ अनुवादक

नोट: पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित विचार रचनाकारों के निजी हैं, उससे संपादक मंडल या संरक्षक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। रचनाकारों की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा



हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा 2022 समारोह के पावन अवसर पर
सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएँ ...

हिन्दी प्रकोष्ठ

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग



हिंदी दिवस 2022

के अवसर पर
माननीय गृह मंत्री जी
का संदेश



राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार



प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आज़ादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किए हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी का काम-काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को

प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वां खंड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13-14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस-2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन-साधारण के लिए 'लीला हिंदी प्रवाह' मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा-भाषी अपनी-अपनी मातृभाषाओं से निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई-महाशब्दकोश' में 90 हजार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और 'ई-सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हजार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी 'बृहत् शब्दकोश' के निर्माण पर भी काम शुरू किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यहीं पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द-संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। **राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।**

प्रिय देशवासियो ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश-विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते हैं जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आजादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

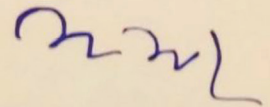
आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2022



(अमित शाह)

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव



संदेश



मुझे हर्ष है कि हमारा कार्यालय वर्ष 2022 हेतु वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका "नवीन पूर्वाचल संदेश" का 17वां संस्करण प्रकाशित कर रहा है। मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका इस कार्यालय के अधिकारियों/ कर्मचारियों को हिंदी में पढ़ने, लिखने एवं सोचने के लिए प्रोत्साहित करेगा। मैं अपने कार्यालय के सभी सदस्यों को बधाई देता हूँ, जिन्होंने इस प्रकाशन में निहित लेखों का योगदान दिया है। यह प्रकाशन हमारे सदस्यों को उनकी साहित्यिक प्रतिभा अभिव्यक्त करने हेतु एक मंच प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, हमें राजभाषा हिंदी के उपयोग को प्रगति की दिशा में अग्रसर होने में सहायता प्रदान करता है।

मैं, इस पावन अवसर पर अपने कार्यालय के उन अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी हार्दिक बधाई देता हूँ, जिन्होंने हमारी राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने एवं प्रचार-प्रसार करने में अपने कर्तव्य का निर्वहन प्रेम भाव से किया है।

ई-पत्रिका "नवीन पूर्वाचल संदेश" के प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

फ्रेडरिक सिम्लेह

(फ्रेडरिक सिम्लेह)

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

अक्सर पर प्रयोगी और आनु ध्वन्य
प्रतियोगिता का भी आयोजन किया
गया एवं विजेताओं को नगद
पुरस्कार प्रदान किए गए। अन्ततः
इस वर्ष के हिन्दी पखवाड़ कार्यक्रम
का समापन कायलतय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा), शिलांग के स्थान
अधिकारी, पाभा रॉय रिंखलेम के
न्यवदा ज्ञापन और राष्ट्रगान के
न्या किया गया।

संदेश



अपार हर्ष का विषय है कि प्रत्येक वर्ष के भांति इस वर्ष भी इस कार्यालय की वार्षिक ई-पत्रिका "नवीन पूर्वाचल संदेश" के 17वें अंक का संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है।

हिंदी हमारी राजभाषा है। आज हिन्दी केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में राजकाज की भाषा के रूप में प्रासंगिक है। हमारा कार्यालय "ग" क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद राजभाषा हिन्दी के सफल कार्यान्वयन हेतु अधिक से अधिक कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करने हेतु प्रयासरत है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका को सफल बनाने हेतु अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा लिखी जा रही रचनाएँ हिन्दी के प्रति प्रेम और निष्ठा एवं राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में उनकी सक्रिय भूमिका को आलोकित करती है। यह पत्रिका अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों को अपनी सृजनात्मक गतिविधियों को हिंदी में व्यक्त करने का एक मंच प्रदान करती है, जो उनके विचारों की मौलिकता और नैतिक भावनाओं को दर्शाती है।

पत्रिका की सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएं।

अनीश डी

(डॉ. डी. अनिश)

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

Hindi Fortnight celebration ends

SHILLONG, Sep 28: The Regional Training Institute, Shillong, under the patronage of the Accountant General (Audit) Meghalaya, office of the Accountant General (A&E), Meghalaya, organised a closing ceremony of Hindi Fortnight celebrated at the Civil Auctioneers Sports and Cultural grounds here on Monday. Cash awards were given to A&E office here, on Monday. Cash awards were given along with certificate to the first (Rs 1,000), second (Rs 700) and third prize (Rs 500) winners in general competitions including Antyashilpi essay writing and translation competition. Hindi essay participants of the district level competitions. Remaining also gave cash award to the mentioned competitors were also given cash award of Rs 200. Quiz and extempore speech competitions were also organised on the occasion with cash awards given away to the winners.

संपादकीय...

हमारी कार्यालयीन राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु इस कार्यालय की ओर से वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका “नवीन पूर्वाचल संदेश” के 17वें अंक को प्रकाशित करते हुए बेहद हर्ष एवं खुशी का अनुभव हो रहा है।

किसी भी स्वाधीन देश के लिए जो महत्व उसके राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान का है, उसी तरह राजभाषा का है। हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन भी एक प्रमुख दायित्व है।

इस कार्यालय की पत्रिका परिवार का सदैव यह प्रयास रहा है कि पाठकों की पठन-पाठन व लेखन में रुचि बनी रहे। हम सभी का यह प्रयास रहे कि सभी कार्य हिंदी में करें, जिससे हमारी अपनी संस्कृति और देश का सम्मान पूरे विश्व में प्रतिष्ठित हो सके।

लेखा एवं हकदारी कार्यालय के सभी रचनाकारों, पाठकों और उन महानुभावों को आभार, जिनके दिशानिर्देशों एवं सुझावों से पत्रिका उत्तरोत्तर परिष्कृत होती रही है। हमें विश्वास है कि यह अंक राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी अपार निष्ठा व संकल्प का परिचय देगा।

सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे अपने बहुमूल्य सुझाव प्रेषित करें ताकि इस पत्रिका के आगामी संस्करण को और अधिक सार्थक व परिमार्जित बनाया जा सके।

जय हिंद, जय हिंदी।

आपके पत्र

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी ई-गृह पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" का 16वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में समाहित सभी लेख व कविताएं उच्चकोटि की हैं। श्री प्रियतोष चौधरी की रचना "आज की वास्तविकता" रोचक है। श्रीमती राजलक्ष्मी गांगुली की रचना "देवभूमि वाराणसी" एवं श्री दीनानाथ साह की रचना "भारत की आदर्श महिलाएं" ज्ञानवर्धक है। श्रीमती पल्लवी सोम की कविता "बचपन के वे दिन" एवं श्री स्वास्तिक बी. रसाईली की कविता "हिंदी है महान" प्रशंसनीय है।

आशा करती हूं कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। शुभकामनाओं सहित।

उप महालेखाकार (प्रशासन)

प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.) का कार्यालय, कर्नाटक, बेंगलूरु

आपके कार्यालय की हिंदी ई-पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के सोलहवें अंक की इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। श्री पार्थ ज्योति दे का लेख-"ई-ऑफिस", श्री सुमित कुमार वर्मन का लेख "ओलंपिक में भारत का इतिहास" श्रीमती लक्ष्मी देवी का लेख "पुरुषवादी मानसिकता" सुश्री आराधना कुमारी का लेख "शिलांग की बारिश" आदि पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। सभी लेख पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएं।

धन्यवाद।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यालय
बेंगलोर-560001

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "नवीन पूर्वाचल संदेश" के 16वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर छायांकित छायाचित्र एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र काफी अच्छे लगे। संकलित समस्त रचनाएं सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर श्री आनंद कौशल का लेख "विलंबित न्याय वंचित न्याय के बराबर", श्रीमती रानी गिरि का लेख "असंगठित क्षेत्र हेतु सामाजिक सुरक्षा", श्री पार्थ ज्योति दे का लेख "ई-ऑफिस", श्री गोविंद कुमार की रचना "कोरोना", श्री दीनानाथ साह का लेख "भारत की आदर्श महिलाएं" एवं श्रीमती स्निग्धा फुकन का लेख "ई-कचरा" आदि रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

पत्रिका कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को उत्तरोत्तर बढ़ाने के अभियान को सफलतापूर्वक संपादित कर रही है। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, इसी शुभकामना के साथ आपकी पत्रिका "नवीन पूर्वाचल संदेश" के उज्ज्वल भविष्य हेतु लेखा संगम परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-I, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित कार्यालयीन हिंदी पत्रिका "नवीन पूर्वाचल संदेश" का 16वें अंक इस कार्यालय में ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। धन्यवाद

पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं सटीक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पठनीय, प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। सभी रचनाएं एक से बढ़कर एक हैं। श्री आनंद कौशल कृत "विलंबित न्याय वंचित न्याय के बराबर", श्री प्रियतोष चौधरी कृत "आज की वास्तविकता" भावनात्मक, श्रीमती उमा देवी थापा कृत "एक पत्नी की आपबीती" हृदयस्पर्शी एवं सुश्री आसी सोनी कृत "कोशिश" प्रेरणादायक हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका “नवीन पूर्वाचल संदेश” के 16^{वें} अंक की प्रति प्राप्त हुई, हार्दिक धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ मनोरंजक एवं लाभप्रद हैं, विशेषकर, श्री आनंद कौशल द्वारा रचित लेख ‘विलंबित न्याय वंचित न्याय के बराबर’, श्री सुमित कुमार वर्मन द्वारा रचित ‘ओलिंपिक में भारत का इतिहास’, श्रीमति प्रिया साव द्वारा रचित ‘कोरोना एवं बेरोजगारी’ अत्यंत सराहनीय हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को बधाईयाँ।

शुभकामनाएँ।

व. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्षा)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय
केरला, तिरुवनंतपुरम-695 001

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका “नवीन पूर्वाचल संदेश” के 16^{वें} अंक की ई प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ, रूपसज्जा एवं छायाचित्र अत्यंत सुंदर एवं आकर्षक हैं। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं प्रशंसनीय, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं। सभी रचनाकारों ने विषय के अनुरूप बहुत ही सुंदर तरीके से वर्णन किया है। विशेषकर, श्री शैलेन्द्र कुमार मौर्या का लेख “जीवन के प्रति बच्चों जैसा उत्साह बनाए रखना जरूरी है”, श्री नीरज कुमार गुप्ता की कविता “कौन हारा” तथा सुश्री कंचन छेत्री की कविता “जिंदगी का कड़वा सच” उल्लेखनीय हैं। राजभाषा के प्रचार-प्रसार में पत्रिका का कार्य बहुत सराहनीय है।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी की दशा एवं दिशा में उत्तरोत्तर सकारात्मक प्रयास परिलक्षित होंगे।

पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्जवल भविष्य हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-II, मध्य प्रदेश, ग्वालियर-474002

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित "नवीन पूर्वाचल संदेश" के 16 वें अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही उच्चतर श्रेणी की हैं। विशेषकर श्री स्वास्तिक वी. रसाईली जी की हिन्दी है महान, श्री पार्थ ज्योति दे जी की ई-ऑफिस, श्री पुरुषोत्तम जी की कोरोना महामारी के दौरान डिजिटल इंडिया से संबंधित कार्यक्रमों की अहम भूमिका, सुश्री आसी सोनी जी की कोशिश आदि रचनाएँ प्रशंसनीय व सराहनीय है।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी प्रकोष्ठ)

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) झारखण्ड का कार्यालय, राँची-834002

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित छमाही हिंदी ई-पत्रिका "नवीन पूर्वाचल संदेश" के 16^{वें} अंक प्राप्त हुआ। एतदर्थ धन्यवाद। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर, श्री आनंद कौशल द्वारा रचित लेख 'विलंबित न्याय वंचित न्याय के बराबर', दिल को छू गई। श्रीमती उमा देवी थापा द्वारा रचित "एक पत्नी की आपबीती" बहुत अच्छी लगी।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, भुवनेश्वर-751017 (ओड़िशा)



उपरोक्त विषय पर आपके द्वारा प्रेषित हिंदी ई-पत्रिका "नवीन पूर्वाचल संदेश" के 16वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका के सभी रचनाएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), असम, गुवाहाटी

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका "नवीन पूर्वाचल संदेश" के 16वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में छपी समस्त लेख व रचनाएं स्तरीय एवं रुचिकर हैं। पत्रिका के इस सुंदर अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में आपका प्रयास सराहनीय हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड



अनुक्रमणिका

म्याँव	1	भारत में रविवार की छुट्टी किसने दिलाई?	18
श्री आनन्द कौशल - वरिष्ठ लेखा अधिकारी		श्री पार्थ ज्योति दे - सहायक लेखा अधिकारी	
कलयुग	4	भिक्षावृत्ति	20
श्री नीरज कुमार गुप्ता - आंकड़ा प्रविष्टक		श्रीमती रानी गिरि - पत्नी श्री पुरुषोत्तम गिरि	
अंधविश्वास	5	चुटकुले	23
सुश्री प्रिया साव - कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक		श्री सुशान्त बी रसाईली	
आज का इंसान	6	स्वनामधन्य शिल्पी भारत रत्न भुपेन हाजरिका	24
श्री राज्य पाल देवकोटा - सहायक लेखा अधिकारी		श्री दीननाथ साह - टंकक/लिपिक	
ईश्वर आध्यात्मिक प्रेम को ही अनुमोदित करते हैं	7	माजुली	26
श्री अशोक कुमार - वरिष्ठ अनुवादक		श्रीमती स्निग्धा फुकन - हिन्दी अधिकारी	
आज अभी	8	हवा	29
श्रीमती जेनेविव हेक - सेवानिवृत्त पर्यवेक्षक		श्री राज्य पाल देवकोटा - सहायक लेखा अधिकारी	
जनपद बैशाली	9	मूस की मेहनताना	30
श्री विजय कुमार - लेखाकार		श्री स्वास्तिक बी रसाईली	
कुछ अशआर	9	मेघालय के विभिन्न पर्यटन स्थल	31
श्रीमती मोनिका तोमर - पत्नी श्री श्रवण कुमार, डी.ई.ओ.		राजनीतिक वादे	35
धैर्य	10	श्रीमती वीणा कुमारी राय	
श्री राहुल ढाका - टी.एम.सी. अनुभाग		वन	36
नशा मुक्त भारत	11	जयश्री	
श्री विशाल छेत्री		सफलता	37
पजल	12	श्री सुरेन्द्र कुमार - स्टेनोग्राफर	
श्री पुर्णेन्दु चक्रवर्ती		सबरिमला	38
बैंकों का बदलता स्वरूप	13	राजलक्ष्मी	
श्री पुरुषोत्तम गिरि - वरिष्ठ अनुवादक		हिन्दी : राजभाषा या राष्ट्र भाषा	39
मीडिया	16	श्री अशोक कुमार - वरिष्ठ अनुवादक	
सुश्री प्रिया साव - कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक		हिंदी दिवस	41
कृष्णा	17	श्री भागीरथ प्रसाद - आंकड़ा प्रविष्टक	
श्रीमती मेघा रानी - पत्नी श्री भागीरथ प्रसाद, डी.ई.ओ.		तस्वीरों द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों की एक झलक	42

हिंदी भाषा से संबंधित सूक्तियाँ

1. "राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है"- महात्मा गांधी
2. "हिंदी का पौधा दक्षिणवालों ने त्याग से सींचा है।" – शंकरराव कप्पीकेरी।
3. "अहिन्दी भाषा-भाषी प्रांतों के लोग भी सरलता से टूटी-फूटी हिन्दी बोलकर अपना काम चला लेते हैं।"- अनंतशयनम् आयंगार
4. "हिन्दी भाषा उस समुद्र जलराशि की तरह है जिसमें अनेक नदियाँ मिली हो।"- वासुदेवशरण अग्रवाल
5. "जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता"- डॉ. राजेंद्र प्रसाद
6. "हमारी नागरी लिपि दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपि है"- राहुल सांकृत्यायन
7. "हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है"- सुमित्रानंदन पंत
8. "सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक है, तो वो देवनागरी ही हो सकती है"- जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर
9. "हिंदी का प्रचार और विकास कोई रोक नहीं सकता"- पंडित गोविंद बल्लभ पंत
10. "राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है।" - बालकृष्ण शर्मा नवीन।
11. "हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी"- सी. राजागोपालाचारी
12. "प्रांतीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती"- सुभाष चंद्र बोस
13. "मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता"- आचार्य विनोबा भावे
14. "हिन्दी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं" - मौलाना हसरत मोहानी
15. "राष्ट्रभाषा हिंदी का किसी क्षेत्रीय भाषा से कोई संघर्ष नहीं है।" - अनंत गोपाल शेवड़े।

म्याँव



श्री आनन्द कौशल
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

एक दिन हमारी बच्ची (सानु) अपने कमरे में बैठ कर पढ़ रही थी कि कहीं से एक तीन रंगों की धब्बे वाली सुंदर सी बिल्ली उनके दरवाजे से अंदर आ गई। किन्तु वह कुछ कह पाती कि बिल्ली डरकर भाग गई। दो दिन बाद अचानक वही दृश्य दुबारा से घटी। इस बार बिल्ली सहमी सी नजर से हमारी बच्ची की ओर देखते हुए दरवाजे पर खड़ी रही। यह देख सानु ने रसोईघर से, जहां उसकी माँ मछली पका रही थी, मछली का एक टुकड़ा लाकर बिल्ली को दे दिया। सानु ने बिल्ली को मछली खिलाई इससे बढ़कर बिल्ली के लिए और क्या हो सकता। किन्तु बिल्ली मछली खाने के बाद चली गई।

दूसरे दिन बिल्ली फिर से आई। आज सानु ने उसे एक कटोरी दूध लाकर दी। बिल्ली कटोरी भर दूध पीकर चुपचाप चली गई।

तीसरे दिन दोपहर में हम खाना खा रहे थे कि तभी बाहर से दरवाजा खटखटाने की आवाज आई तो मैं दरवाजे की ओर गया। दरवाजे को कोई अविराम खटकटाया ही जा रहा था तो मैंने कहा - "अरे खोलता हूँ यार।" मैंने दरवाजा खोला और मैं अभी कुछ समझ पाता कि वही बिल्ली दौड़ती हुए सानु के सामने जाकर खड़ी होकर सानु की ओर अपेक्षित दृष्टि

से घूरने लगी। मानो वह सोच रही थी कि सानु उसे खाने के लिए कुछ तो देगी। ऐसा ही हुआ। सानु ने एक छोटी सी कटोरी में उसे दूध और चावल दे ही दी। यह देख सानु की माँ गुस्से से बड़बड़ाई। किन्तु सानु को कुछ फर्क नहीं पड़ा। बिल्ली भी मजे से दूध चटकाने लगी। इस बार बिल्ली खाने के बाद भी बाहर नहीं गई।

सानु अपना खाना खाने के बाद बिल्ली को -" आ म्याँव आ" कहती हुई बिल्ली को अपने गोद में उठाई और अपने कमरे की ओर चली गई। आश्चर्य की बात यह थी कि बिल्ली में भी कोई हिचकिचाहट नहीं दिखी। हम पति-पत्नी यूँही देखते रह गए। कुछ देर बाद मैं सानु के कमरे में गया तो देखा कि दोनों मजे से सो रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो यह बिल्ली हमारे घर का ही सदस्य हैं और हमारे पास सालों से रह रही हैं। जबकि हमारे यहाँ आये हुए बस तीन ही दिन हुआ था। संध्या होते-होते बिल्ली बाहर निकल गयी। सानु के उपर इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुयी।

अगले दिन सुबह-सुबह ही बिल्ली दरवाजा खटखटाने लगी। इधर सानु भी फटाक से बिस्तर से उठ खड़ी हुई और दौड़ती हुई जाकर दरवाजा खोली और बिल्ली को गोद में उठा लेती हैं। बिल्ली की गाल से गाल लगा कर - 'ओ मेरी म्याँव - ओ मेरी म्याँव।' बस और क्या था बिल्ली और सानु दोनों खेलने लगे। उस दिन से बिल्ली हर रोज दिन में कई बार आने लगी। अब वह बिल्ली, बिल्ली न होकर म्याँव हो गई थी। अब सानु म्याँव के लिए बाजार से बिल्ली की थैली वाली खाना भी लाने लगी। यहाँ तक कि अब घर में म्याँव के लिए मछली भी

नवीन पूर्वाचल संदेश

उसके हिस्से की आने लगी। और अब सानु तो सानु हमें भी म्याँव से लगाव हो गया और उसे कुछ क्षण न देखने पर ऐसा लगता मानो कुछ विशेष वस्तु खो गयी हो। चारो तरफ हम सब म्याँव - म्याँव करते लगते।

दो तीन महीने में ही घर में म्याँव के कई वस्तुएं इकट्ठा हो गयी थी। जैसे - म्याँव का बिस्तर, कम्बल, उसके खेलने के लिए कुछ गेंदें, उसके खाने के लिए थाली, इत्यादि।

एक दिन हम सब मिलकर पाकघर में कुछ खास व्यंजन बना रहें थे और गप्प-सप्प कर रहें थे कि तभी म्याँव जो बैठक में गेंद से खेल रही थी कुदते हुए आई और घबराहट भरी अंदाज में म्यावं-म्यावं-म्यावं-म्यावं-म्यावं-म्यावं कुछ इस तरह कर रही थी कि मानो वह कह रही हो कि तुम सब यहाँ मस्ती कर रहे हो और मुझे कुछ हो गया है। ऐसा महसूस हो रहा था कि वह हमें कुछ दिखाने चाहती हैं। वह म्यावं - म्यावं करते हुए बैठक की ओर गई। हम सब भी उसके पीछे-पीछे बैठक में पहुंचे तो देखा कि वहाँ जमीन पर कुछ खून के बूंदें पड़ी थी। यह देख सानु ने म्याँव को गोद में उठा लिया और देखने लगी कि कहीं उसे चोट तो नहीं लगी। वैसे उसे कोई चोट नहीं लगी था किन्तु खून उसके गुप्त अंग से निकल रही थी तो हमने अनुमान लगाया कि जानवरों के भी मासिक धर्म की तरह कुछ होता हो। पर सानु जिद्द करने लगी कि म्याँव को जानवरों के अस्पताल ले जाना होगा। अब बच्ची की जिद्द के आगे हमारा क्या चलता। अगले दिन कार्यालय से आकस्मिक अवकाश लेकर म्याँव को अस्पताल ले जाना पड़ा। जानवरों के अस्पताल में अनेक जानवरों को

देख मानो म्याँव के होश उड़ गये हो। उसे सम्भालाना मुश्किल हो रहा था। उसे जानवरों की डाक्टर के सलाह के अनुसार एक बेजी लगाई गई और कुछ दवा लेकर हम आ गए। शायद यह म्याँव का अस्पताल में और गाड़ी चढ़ने की पहला अनुभव था। अजीब हरकतें कर रही थी। म्याँव अब हमारे घर के एक अटूट सदस्य बन गई थी। वह अब ज्यादा तर घर पर ही रहती और बीच-बीच में कहीं टहलने निकल जाती थी। कभी-कभार उसके साथ कोई बिल्ला भी दिख जाता। परन्तु बिल्ली घर के अंदर कभी नहीं आता।

म्याँव को हमारे यहाँ होते हुए चार-पाँच महीने हो चुके थे। अब यह साफ दिख रहा था कि म्याँव पेट से हैं। अब वह कुछ आलसी दिखने लगी थी। जहाँ-तहाँ सो जाती थी। सानु कहती थी कि उसे अब पौष्टिक खाना देना पड़ेगा। तब म्याँव को जो भी बच्चे होंगे वह सब सुन्दर और स्वस्थ होंगे और उन्हें भी हम अपने पास रखेंगे। यह सुन सानु की माँ कहने लगी - 'इतने सारे जानवर कहाँ रखेंगे। एक म्याँव ही काफी है।'

खैर कुछ दिन बाद एक दिन म्याँव सानु के आगे पीछे म्याँव - म्याँव - म्याँव - म्याँव करती हुई घुम रही थी तो सानु ने उसे उठाकर - 'क्या बात है म्याँव ?' कहती हुई म्याँव को उसके बिस्तर में रख दिया। जब सानु उसे छोड़ वहाँ से जाने लगी तो म्याँव फिर चिल्लाने लगी मानो वह कह रही कि मत जाओ आओ यहाँ मेरे पास बैठो। यह देख सानु उसके सामने बैठ गई। कुछ ही क्षण में म्याँव ने कुछ हरकत शुरू की म्याँव की प्रसव क्रिया शुरू हुई। यह देख

सानु जोर-जोर से चिल्लाने लगा - 'पिताजी, माँ देखो म्याँव बच्चा दे रही हैं।' हम भी तुरन्त वहाँ पहुँचे तो देखा कि म्याँव ने सच में एक बच्चे को जन्म दे चुकी थी और दुसरे दे रही थी। म्याँव ने दो ही बच्चों को जन्म दिया और अब वे बच्चों को चाट-चाट कर साफ कर रही थी।

अब म्याँव ज्यादातर समय बच्चों के साथ रहती थी। बिल्लियों का यह प्राकृतिक स्वभाव होता है कि वे अपने बच्चों को कई बार एक जगह से दूसरे जगह स्थानांतरण करते हैं। म्याँव ने भी कई बार अपने बच्चों को स्थानांतरण करने का प्रयास किया किन्तु सानु और उसकी माँ म्याँव को ऐसा करने नहीं दिए। अब सानु की माँ भी म्याँव से बहुत बातें करने लगी। जब भी म्याँव बाहर से घुम-फिर के आती तो सानु की माँ उसे मीठे स्वर में कहती- 'म्याँव, आ गई? कहाँ गई थी? देख तेरा बाबु कहाँ गए? देख-देख-देख, बाबु-बाबु-बाबु।' सानु की माँ की यह बाबु वाला स्वर को म्याँव ने पकड़ लिया था। अब जब भी म्याँव घुम के आती, कमरे में बाबु के ओर जाते हुए एक जैसे स्वर में वह खुद भी मानो बाबु-बाबु कहती हुई सुनाई देती। आश्चर्य!

बच्चें महीने भर के हो चुके थे फिर भी डरते हुए कमरों के चारों तरफ घुमते थे। अचानक कोई आ जाए तो भागकर अपने टोकरी के अन्दर छिप जाते थे। देखने में और उनसे खेलने में बहुत अच्छा लगता था। एक आनंदमय अनुभव का एहसास होता था। लेकिन एक दिन अचानक दोनो बच्चों को *डारिया* हो गया तो हमने उन्हें जानवरों के डाक्टर के पास ले गए। डाक्टर ने उन्हें कुछ दवा दी और साथ में

एलेक्ट्राल भी दिया। हमने उन्हें दवा समय अनुसार खिलाया और एलेक्ट्राल रह रह कर खिलाया। दुर्भाग्यवश अगले दिन म्याँव के दोनो बच्चें नहीं रहे। हम तीनों निस्तब्ध थे। कुछ समझ नहीं पा रहे थे। म्याँव दोनो बच्चों के मृत शरीर को अपने गोद में दबोचे, दुखी नजरों से देखते हुए मधुर स्वर में म्याँव - म्याँव कर रही थी। सानु की आँखों से निरंतर आँसूओं के धारा बह रही थी। मैंने सानु को संत्वाना देते हुए कहा - 'ये क्या सानु? अब तुम डाक्टर बन गई हो और कुछ दिनों में अपना अभ्यास भी शुरू करने वाली हो। तुम्हें यह शोभा नहीं देता।' मैंने जो कहना था वह कह दिया। परन्तु मैं खुद को भी समझा नहीं पा रहा था। उधर सानु की माँ भी अपने-आपको वह दृश्य से दूर ले गई।

कुछ देर बाद म्याँव भी बाहर गई। मौका देखकर मैंने म्याँव के दोनो बच्चों के मृतक शरीर को उनके ही कपड़ों में लपेटकर पास के एक खेत में दफना दिया। वापस घर आकर मैंने सारे घर की सफाई की। अब कुछ सामान्य सा लग रहा था कि तभी म्याँव बाहर से आई और कमरों के चारों ओर शृंगर्षण लगी और शृंगर्षण करते हुए उसने, ऐसा हृदय को छुने वाला आवाज में बाबु (मामु) - बाबु (मामु) - (मामु) - बाबु (मामु) कहते हुए कमरे की चारो तरफ अपनी बच्चों को खोजने लगी। उसे देखकर मैं अपने आप को रोक नहीं पाया। मैंने तुरन्त कमरों का दरवाजा बन्द कर दिया और म्याँव को गोद में उठा लिया। मेरे आँखों से आंसु की लहर रुक ही नहीं रही थी।

कलयुग

श्री नीरज कुमार गुप्ता
आंकड़ा प्रविष्टक

भाग-1 अंधकार

“ये युग है बड़ा बड़मान है,
कलयुग में मरता राम है।
ये निर्दयता का अभिमान है,
इस कालखंड की यह पहचान है।।”
“करुणा मुखता कहलाएगी,
आदर चापलूस बन जाएगी।
त्याग को स्वार्थ नचाएगी,
प्रेम को मोह खा जाएगी।।”
“भौतिकता तांडव कराएगी,
सरलता स्वयं मृत्यु पाएगी।
धीरज को अधीर हर जाएगी,
प्रकाश को तमस ढक जाएगी।।”
“अश्रु दंभ बन जाएगा,
हसी दुजो को जलाएगा।
प्रकृति का चीर हरण होगा,
वायु-वृक्ष का मरण होगा।।”
“प्रतिष्ठा पर लांछन बरसेंगे,
निष्ठा पर खंजर चमकेंगे।
मोह अश्रु बहाएंगे,
परिजन शत्रु हो जाएंगे।।”
“नीरस सब राग सुनेंगे,
कटु वचनों से सबको दसेंगे।
निर्बल को प्रताड़ेंगे,
नयनों में छल को पालेंगे।। ”
“ये युग बड़ा बैड़मान है,
कलयुग में मरता राम है।।”

भाग-2- प्रकाश

“ये युग बड़ा बड़मान है,
पर मरता कहां राम है
भले निर्दयता का अभिमान है,
पर काल का ही तो मेहमान है!!”
द्वापर वापस आएंगे,
सतयुग को साथ वो लाएंगे,
कलयुग से तब तक लड़ेंगे हम
फिर कल्कि ‘परचम’ लहराएंगे !!
तमस में दीप्ति जलाएंगे,
कलयुग को खुब सताएंगे,
हंसेगा जब वो हराकर हमको,
हम भी मंद-मंद मुस्कराएंगे,
कलयुग को खुब सताएंगे !!”
जीत-हार से फर्क क्या पड़ता,
बस कर्तव्यों को निभाएंगे,
अनीति पर चलेगा जब कलयुग,
उसे नीति शास्त्र पढ़ाएंगे
कलयुग को खुब सताएंगे !!
तरकश में प्रेम वाण रखेंगे,
क्रूरता के छाती को छलेंगे,
प्रचण्ड प्रहार करेगा जब कलयुग,
तब काल-भैरव को बुलाएंगे,
कलयुग को खुब सताएंगे !!
त्याग-प्रेम हारेगा जब-जब,
हम धर्म का स्मरण करेंगे,
कलयुग के मस्तिष्क में घुसकर,
उसे गीता का पाठ सुनाएंगे !!
रावण का हथ्र बताएंगे,
कंस की छवि दिखलाएंगे,
कृष्ण रास सुनाएंगे,
पर कलयुग को खूब सताएंगे। ”

अंधविश्वास

प्रिया साव
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

अंधविश्वास एक छोटा सा शब्द प्रतीत होता है परंतु इसका अर्थ बहुत व्यापक है। अंधविश्वास का तात्पर्य हम ज्ञान रूपी नेत्र बंद कर बिना सोचे समझे विश्वास करने लगते हैं उसे अंध विश्वास कहते हैं। अंधविश्वास सदियों से चली आ रही है एवं इस समाज में अंधविश्वास अपना ऐसा प्रभुत्व जमा चुका है, जिससे निकालना बहुत मुश्किल हो चुका है। अंधविश्वास आज के लोगों को अपंग एवं उनके मस्तिष्क को संकुचित कर चुका है। आज हम इक्कसवीं शताब्दी में एक तरफ प्रगति एवं विकास की बातें करते हैं एवं दूसरे तरफ अंधविश्वास की जंजीर से जकड़े हुए हैं। जब तक इस जंजीर को तोड़कर हम बाहर नहीं निकलेंगे तब तक हम अपना एवं समाज का विकास नहीं कर पाएंगे। कभी हम सारी सीमाओं को लांघ करके विश्वास करने लग जाते हैं, चाहे वह विश्वास ईश्वर में हो या मनुष्य में। अंधविश्वास का पहला मूलभूत कारण है भय। मृत्यु का भय, परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने का भय, नौकरी न मिलने का भय आदि। उस डर को दूर करने के लिए मनुष्य अंधविश्वास का सहारा लेता है। और यही उसे अंधविश्वासी बनाता है। देश में सबसे ज्यादा अंधविश्वास भारत में है। क्योंकि यहां के लोग ईश्वर को बहुत अधिक मानते हैं। यही वजह से कुछ पांखड़ी इसका लाभ उठाते हैं। मेरा मानना है कि प्रभु की आज्ञा का पालन करना चाहिए और उस पर विश्वास करना कोई बुरी बात नहीं है। लेकिन उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है सत्य और असत्य में भेद करने की क्षमता।

हमारे इस विशाल देश में अधिकांश लोग अंधविश्वास का शिकार बने हुए हैं। लोग ऐसा मानते हैं कि कही जाते समय बिल्ली रास्ता काट दे तो लोग अपना महत्वपूर्ण कार्य को छोड़ देते हैं। उनका मानना है कि बिल्ली के रास्ता काटने से दुर्घटना हो सकती है। इसलिए लोग अपना कार्य बीच में ही छोड़ देते हैं। क्या इस प्रकार बिल्ली के द्वारा रास्ता काटने से अपना कार्य छोड़ देंगे। तो हम अपना कार्य कैसे कर पायेंगे।

कहीं जाते समय एक छींक आ जाती है। तो उस यात्रा को अशुभ मनाते हैं। यदि घर के ऊपर कौवा बोलता है। तो माना जाता है। कि घर में कोई मेहमान आयेगा। क्या कोई महात्मा होता है। उसे क्या पता होता है। कि आज कोई मेहमान आने वाले हैं। यदि कही जाते समय बायीं तरफ मैना बोलती है। तो मानते हैं कि यात्रा नहीं करना चाहिए।

नवीन पूर्वाचल संदेश

कई लोगो की दुकानों के आगे नींबू तथा मिर्च को लटकाया जाता है। जिससे मानते हैं कि भूत-प्रेत तथा दुकान में कोई नजर नहीं लगती है। कई लोग अपने हाथों में कड़ा पहनते हैं। जिससे माना जाता है कि भूत लोहे से डरते हैं। इसलिए भूत उसके पास नहीं आता है। क्या बिना कड़े वाला व्यक्ति के पास कभी भूत आया है।

शादी, नई घर में निवास तथा तीर्थ यात्रा करते लोग मुहूर्त से करते हैं। यदि मुहूर्त अच्छा होता है तो वह इस दिन को ही अपना कार्य कर लेंगे नहीं तो वे अपने कार्य को मुहूर्त की वजह से स्थगित कर देंगे तथा अच्छा मुहूर्त मिलने पर अपना इस शुभ कार्य करेंगे।

सच यह है कि न किसी नंबर से, न बिल्ली के द्वारा रास्ता काटने से, न किसी कि नजर से, न किसी मुहूर्त से हमारे शरीर पर कोई असर नहीं पड़ता है। इस प्रकार के टोने-टोटको से, न ही हमारा कोई कार्य शुभ होता है और न ही अशुभ होता है। हम जिस प्रकार के कर्म करेंगे उसी प्रकार के हमें फल प्राप्त होंगे। इसलिए स्वयं पर भरोसा रखे और अपने कर्म पथ पर अड़िग रहे।

आज का इंसान

श्री राज्य पाल देवकोटा
सहायक लेखा अधिकारी

थम जा रे ओ इंसान
भागो किसके पीछे तू
निहार चारों ओर तेरे
क्या तेरा मंजिल अधिक लुभावन है?

बस भागने को आतुर क्षितिज निहारे
कदमों में पड़ा मखमल दिखाई न दें
कंकड़ बिछे जब पैरों में
मखमली अहसास को याद करें

देर न हुई अभी थमने को
सांस ले कुछ फुर्सत में
थम गई सांस अगर भाग दौड़ में
कौन संभाले तेरे निश्चल तन को।

ईश्वर आध्यात्मिक प्रेम को ही अनुमोदित करते हैं

लेखक- अशोक कुमार,
वरि.अनुवादक

प्राचीन यूनान में थेसली नामक एक लोकप्रिय प्रांत था जहां का राजा प्राटिसिलास था। थेसली की रानी अर्थात् प्राटिसिलास की पत्नी लौडामियां थी। प्राटिसिलास एक महान योद्धा था। ट्राय के युद्ध में नायक हेक्टर फ्रूमे, एक वीर योद्धा द्वारा दस हजार सैनिकों समेत उसे मार डाला गया था। जब लौडामियां को अपने पति के मरने का संदेश मिला तो उसने भगवान जोव (यूनानी देवताओं के देवता) की साधना, पूजा अर्चना की क्योंकि उसे विश्वास था कि भगवान उसकी मनोकामना अवश्य पूर्ण करेंगे। हिन्दू ग्रंथ- रामचरित मानस में भी लिखा है कि-

“जो इच्छा करिहहु मन माहीं, हरि प्रसाद कुछ दुर्लभ नाहीं।”

“जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलइ न कुछ संदेहू।”

उसने अपने सतीत्व तथा पतिव्रत धर्म से भगवान जोव (ग्रीक देवता) के समक्ष एक प्राणी की बलि देकर प्रार्थना की कि उसके पति को उसके समक्ष प्रस्तुत करने की कृपा करें। उसकी निश्चल भावपूर्ण भक्ति एवं सच्ची प्रार्थना से जोव (ग्रीक देवता) अति प्रसन्न हुए तथा हरमीज (यूनानी देवदूत) को आदेश दिया कि प्राटिसिलास की आत्मा को तीन घंटे के लिए लौडामियां के समक्ष प्रस्तुत किया जाए। हरमीज ने भगवान के आदेश को शिरोधार्य कर तुरन्त प्राटिसिलास की आत्मा के साथ लौडामियां के समक्ष प्रस्तुत हुए तथा उससे कहा कि तुम्हारी प्रार्थना एवं निश्चल भावपूर्ण भक्ति से भगवान जोव प्रसन्न होकर तुम्हारी पति की आत्मा को तुम्हारे समक्ष भेजा है। यह स्मरण रहे कि केवल तीन घंटे तक तुम्हारे पति तुमसे बातें कर सकते हैं। इतना कहकर हरमीज (देवदूत) अंतर्धान हो गए।

जब लौडामियां ने अपने पति को देखा तो अतीव प्रसन्न हुईं। वह अपने पर काबू न कर सकी एवं अपने पति को पकड़ने या आलिंगन करने की बार-बार कोशिश की परन्तु वह विफल रही। इसके बाद उसने अपने पति से इच्छा प्रकट की कि वह आज पुनःदुल्हन बनी है और वह चाहती है कि वह उसे उसी तरह व्यवहार करे जिस तरह विवाह के समय किया था। उसकी इच्छा थी कि वह अपने पति के साथ पुनःविवाह करके शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकेगी। परन्तु यह प्राटिसिलास के लिए संभव नहीं था क्योंकि वह तो प्रेतात्मा थी। लौडामियां ने अपने पति से आग्रह किया कि वह उससे उसी प्रकार बातें करें जिस प्रकार वह जीवित के समय बातें किया करता था। तत्पश्चात प्राटिसिलास की आत्मा ने लौडामियां से कहा कि तुम अपने दिल को काबू में रखो। उसने आगे अपनी पत्नी को संबोधित करते

नवीन पूर्वाचल संदेश

हुए कहा कि ओ वफादार पत्नी ! तुम अपनी उत्कंठ भावनाओं पर नियंत्रण रखो क्योंकि ईश्वर दिल की गहराइयों वाले प्रेम अर्थात् आध्यात्मिक प्रेम को ही अनुमोदित करते हैं, न कि भौतिक प्रेम या वासनाओं के वशीभूत प्रेम को। उसने आगे कहा कि वासनाओं वाला प्रेम अस्थायी होता अर्थात् समय गुजर जाने पर वह समाप्त हो जाता है। इसके विपरीत आध्यात्मिक प्रेम चिरस्थायी होता है।

इसलिए तुम भौतिक प्रेम के स्थान पर आध्यात्मिक प्रेम या ईश्वरीय प्रेम को स्वीकार करो तथा शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करो। तुम्हें यह पता है कि त्राय के युद्ध में दस हजार सैनिकों सहित त्राय के नायक हेक्टर फ्रूमे द्वारा मेरी हत्या कर दी गई थी। यह सुनकर लौडामियां ने युद्ध में प्रदर्शित की गई उसकी वीरता एवं साहस की प्रशंसा की और कहा कि तुम्हारी वीरता एवं साहस पर मुझे कोई दुःख नहीं है।

प्राटिसिलास ने सलाह दी कि अब तुम इस संसार की समस्याओं से मुकाबला करते हुए शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करो। इसके बाद जैसे ही तीन घंटे समाप्त हुए, हरमीज(देवदूत) आये एवं प्राटिसिलास की आत्मा को लेकर अंतर्धान हो गए।

इस कहानी से यही शिक्षा मिलती है कि आध्यात्मिक प्रेम चिरस्थायी होता है।

आज अभी

लेखिका- जेनेविव हेक,
सेवानिवृत्त पर्यवेक्षक

बीता हुआ कल बीत चुका है,
आने वाले कल का
किसी को कुछ नहीं पता है।
जो पता है वह तो है आज का।
मुसाफिर को जो करना है,
आज अभी ही करना है,
भरिए तेल अपने दिल में,
भरिए अच्छे कर्मों को अपने दिल में,
ताकि मुश्किल न हो, अंधेरे रास्ते खोजने में।
हमें उनकी खोज करनी है, जो अंधेरों में रोशनी दिखाएं,
दुःख, तकलीफ, मुसीबत में अपनों को गले लगाएं।

जनपद बैशाली

विजय कुमार
लेखाकार

बिहार के गौरवशाली जनपदों में एक जनपद बैशाली जहाँ भगवान बुद्ध वर्षों तक अपनी तपस्या साधना किये। भारतीय लोकतंत्र की जननी जो की गंगा नदी से लगभग 38 कि.मी. की दूरी पर अवस्थित है, जहाँ पर भगवान बुद्ध और बौद्ध धर्मों के प्रतीक विशालकाय स्तुप विराजमान है, जो कि पर्यटन की दृष्टि से भी बहुत उत्तम स्थान है। विदेशों से भी पर्यटकों की भारी भीड़ लगी रहती है। जो प्रकृति के समीप लोगो को आकर्षित करते है। यह रमणीय दृश्य देखने के लिए हजारों-हजारों की संख्या में प्रतिदिन लोग आते हैं।

यही से कुछ किलोमीटर की दूरी पर हाजीपुर (हरिपुर) रेलवे स्टेशन है, जहाँ से रोज हजारों की संख्या में मजदूर दिल्ली तथा अन्य बड़े शहरों में अपनी रोजी रोटी के लिए आते जाते रहते है। देश के विभिन्न भागों में अपनी श्रम देकर अपने तथा अपने परिवार के भरण पोषण के लिये धनोर्पाजन का कार्य करते रहते है। जो कि हमारे देश मे बढ़ती बेरोजगारी में बहुत ही कठिन कार्य होता जा रहा है। बीते दिनों वैश्विक महामारी कोरोना के कारण यह कार्य भी सहज नहीं रहा।



कुछ अशाआर

श्रीमती मोनिका तोमर
पत्नी श्री श्रवण कुमार, डी.ई.ओ.

हमने बताए बहुत औरों को गम से उबरने के रास्ते,
जब भी तेरी याद आई तो खुद के आँसू निकल गए।

मेले में रहे हमेशा, जब तक तेरा साथ रहा,

तुझे खो के आज हम मेले में तन्हा हो गए।

तेरे इश्क में आ के हम बहके नहीं कभी,

तेरी जुदाई के बाद सम्भाला नहीं किसी ने।

जानता हूँ आसमां है, हम भी किसी के लिए,

जब भी निकलता है चाँद, रुकती नहीं निगाहे।

तेरे इश्क हमें दिल में यूँ पोशीदा कर लिया,

हमने ना देखा किसी को देखते हुए हमें।

जितना भी चाहूँ हटके लगाऊँ दिल और कहीं,

यादों की छाप दिलपे लगी ऐसी की उतरती नहीं।

धैर्य

श्री राहुल ढाका,
टी.एम.सी.-अनुभाग

दो बहने थीं। दोनों में बहुत ही प्रेम था लेकिन एक दिन दोनों में किसी बात को लेकर बहस हो गई और बात इतनी बढ़ गई कि दोनों एक दूसरे को देखना भी पसंद नहीं करते फिर दोनों अपने कमरे में गई और दरवाजा बन्द कर लिया।

थोड़ी देर बाद छोटी बहन ने बड़ी बहन का दरवाजा जोर-जोर से खटखटाया। जोरों की आवाज सुनकर बड़ी बहन ने दरवाजा खोला तो देखा दरवाजे पर उसकी छोटी बहन खड़ी है। वह बोली अब क्यों मेरे पास आयी हो। छोटी बहन ने कहा गुस्सा तो मैं भी बहुत थी लेकिन मुझे माँ की वो कही हुई बात याद आ गई कि जब भी आप किसी से गुस्सा हो या आपका किसी से झगड़ा हो तो केवल उस व्यक्ति की अच्छाईयों को याद करो। मैंने भी वही किया तो मुझे बस आपका प्यार ही प्यार नजर आया। इसलिए मैं आपके लिए खाना लायी हूँ। यह देखकर दोनों बहने रौने लगी और एक दूसरे के गले लग गई।

जीवन में क्रोध को क्रोध से नहीं जीता जा सकता, बोध से जीता जा सकता है। अग्नि अग्नि से नहीं बुझाई जा सकती है। समझदार व्यक्ति बड़ी से बड़ी समस्या को अपने मीठे शब्दों द्वारा हल कर सकता है। मनुष्य उम्र से नहीं दिल से बड़ा होना चाहिए।

नशा मुक्त भारत

- विशाल छेत्री

पल भर का मजा जिंदगी भर की सजा। नशा एक ऐसी सजा है जो हम न सिर्फ अपने आपको देते हैं, बल्कि अपने परिवार को भी। नशा अनेक परिवार की बीमारी का कारण बन जाता है। हर देश का भविष्य और हर देश की तरक्की उस देश के युवा पर टिकी होती है। देश की युवा पीढ़ी अगर गलत रास्ते पर चला जाए तो निश्चित तौर पर उनका जीवन अंधकार में डूब जाता है।

हमारे भारत में आज के वर्तमान समय में नशा का तनाव युवक में सबसे अधिक होता जा रहा है। आज भी युवा नशा तथा धूमपान करने को अपनी शान समझते हैं।

नशा करने वाले व्यक्ति अपना मान सम्मान सब कुछ खो देता है। नशे ने हमारे पूरे देश को घेर लिया है। नशा के कारण कोई भी व्यक्ति अपने अच्छे और बुरे के बारे में न ही जान पाता है और न ही पहचान पाता है।

नशा हमें बर्बाद करता है। तन मन जीवन चट कर जाता है। नशा हम नहीं खाते बल्कि नशा हमें खा जाता है।

छोड़ो नशा और शराब,
न करो जीवन खराब।

जन जन को जागृत कर हर घर से नशा भगायें आओ मिलकर नशामुक्त भारत बनाएं।
जय हिन्द।

नवीन पूर्वाचल संदेश



श्री पुर्णेन्दु चक्रवर्ती

1. ब्लैक हूँ भैया जी पर बोर्ड नहीं
बोर्ड हूँ जिस पे नाचे हर उंगली।
कर जाती अक्षर अक्षर वह काम
जो ना कर पाये पेन पेंसिल ॥

• कंप्यूटर

2. नाम सुनकर मेरा दिमाग में मचे हलचल।
बिना मुझ से लड़े तुम रहोगे निष्फल॥
खाले तु बादाम जपकर प्रभु का नाम।
निश्चित समय में जीत के मुझे से,
जा पाले अपना मुकाम॥

* परीक्षा

3. धार हूँ समझदार हूँ काबू में रहूँ तो चिर फाड़
वरना फिर हथियार हूँ।
चला के देख लो दिल पे किसी के
दो कर दे ऐसा वार हूँ॥

* चाकू

4. रंग - बिरंगी इठलाती हूँ
खुशबू के संग मंडराती हूँ।
पकड़ ना चाहो तुम मुझको
तुम्हें प्यार से ललचाती हूँ।

* तितली

5. ले लूँ तेरा वह पल
फिर दे दूँ तुझे वह पल।
दिखा दूँ तेरा रूप कैवल
देर से देखा उम्र गई ढल।

* कैमरा

6. खुशबू का गोदाम हूँ
प्रीत का सम्मान हूँ।
हूँ कोमल काया वाला
सो 1 दिन का मेहमान हूँ।

* फूल

बैंकों का बदलता स्वरूप

पुरुषोत्तम गिरि
वरिष्ठ अनुवादक

बैंकों का बदलता स्वरूप और कुशल तकनीकों के प्रयोग के कारण सेविंग्स और करेंट एकाउंट्स, मनी ट्रांसफर, डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर और बिल पेमेंट जैसी सुविधाएँ भारतीय भाषाओं में मुहैया कराई जा रही हैं। काउंटर सर्विसेज, माइक्रो एटीएम, मोबाइल बैंकिंग एप, एसएमएस और आईवीआर के माध्यम से ये सुविधाएँ आम जनता तक पहुँचाई जा रही हैं।

स्वतंत्र भारत में बैंकों का स्वरूप द्रुत गति से आगे रहे हैं। बैंकों ने भारत की अर्थव्यवस्था और वित्तीय समावेशन सहित आम जनता को भी प्रभावित किया है। बैंक किसी भी देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ होते हैं। देश में बैंकिंग व्यवस्था की शुरुआत को इतिहासकार लगभग 18वीं शताब्दी से ही मानते हैं। इसके बारे में कहा जाता है कि अंग्रेजों ने आधुनिक बैंकिंग प्रणाली को लाकर भारत की अर्थव्यवस्था में क्रांति कर दी थी। अंग्रेजों ने सुनियोजित तरीके से धन की उगाही के लिये तीनों प्रेसीडेंसियों मसलन मद्रास, बंबई और बंगाल में बैंकों की स्थापना की। इसके बाद तीनों प्रेसीडेंसी बैंकों को मिलाकर वर्ष 1921 में इम्पीरियल बैंक की स्थापना हुई। भारत की स्वतंत्रता के बाद वर्ष 1955 को इम्पीरियल बैंक की सभी संपत्तियों का अधिग्रहण करके स्टेट बैंक ऑफ इंडिया ने कार्य करना शुरू कर दिया।

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया देश का सबसे पुराना और सबसे बड़ा व्यापारिक बैंक है। इसे राष्ट्रीयकृत बैंकों की श्रेणी में नहीं रखा जाता है। राष्ट्रीयकृत बैंकों में उन बैंकों को रखा जाता है जो 1969 के राष्ट्रीयकरण और उसके बाद सरकार के अधीन आये हैं। वर्ष 1926 हिल्टन यंग कमीशन ने इस बात का सुझाव दिया था कि इम्पीरियल बैंक से अलग एक केन्द्रीय बैंक को स्थापित किया जाना चाहिये जो विदेशी विनिमय कोष प्रबंधन के साथ-साथ नोट भी जारी कर सके। हिल्टन यंग कमीशन पहला कमीशन था जिसने रिजर्व बैंक को प्रारंभ करने की बात कही थी। वर्ष 1934 में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया एक्ट के जरिए 1 अप्रैल, 1935 से रिजर्व बैंक ने कार्य करना शुरू कर दिया। वर्मा विभाजन के बाद रिजर्व बैंक ने वर्ष 1942 तक वहाँ की करेंसी अथॉरिटी और वर्ष 1947 तक वहाँ की सरकार के बैंकर के रूप में भी कार्य किया था। वर्ष 1949 में रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया और तब से यह देश का केन्द्रीय बैंक है। इस समय देश में भारतीय रिजर्व बैंक एवं भारतीय स्टेट बैंक के अतिरिक्त भी कई अन्य व्यापारिक बैंक कार्य कर रहे थे। फिर भी ऐसा महसूस किया जा रहा था कि इन बैंकों के द्वारा कृषि, लघु एवं कुटीर उद्योग, गाँव और कस्बों की लगातार उपेक्षा की जा रही है। उस समय सरकार ने देश के

नवीन पूर्वाचल संदेश

आर्थिक विकास को बढ़ाने के लिए वर्ष 1969 में 14 बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया। इस कदम को और विस्तार देते हुए सरकार ने वर्ष 1980 में 6 और बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया। इन सबके बावजूद भी इसके वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सका। इसलिए सरकार ने बैंक क्षेत्र में सुधार के लिए कई आयोगों का गठन किया।

बैंकिंग क्षेत्र में सुधार के हेतु कई महत्वपूर्ण कदम उठाये गए हैं। बैंकिंग क्षेत्र में सुधार करने के लिए सरकार ने 1991 में एम. नरसिंहम की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय कमेटी का गठन किया था। इस कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि बैंकिंग क्षेत्र में चार स्तरीय ढाँचे की व्यवस्था की जाए जिसमें तीन या चार बड़े बैंक होंगे। भारतीय स्टेट बैंक इसमें शामिल होगा और इसे शीर्ष स्थान प्राप्त होगा तथा यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपना कार्य कर सकेगा। बेसल समिति द्वारा सुझाए गए उपायों को धीरे-धीरे प्राप्त करने की जरूरत है। नरसिंहम समिति ने लाइसेंस प्रणाली को खत्म करने की भी बात कही थी। बैंकिंग क्षेत्र में सुधार के लिए दूसरी बार एम. नरसिंहम की अध्यक्षता में ही एक समिति का गठन किया गया। इस समिति ने अपनी रिपोर्ट में पूंजी खाते की परिवर्तनीयता को

ध्यान में रखते हुए बैंकिंग प्रणाली को और अधिक मजबूत करने पर जोर दिया। इस समिति ने बड़े बैंकों को भी मिलाने पर बल दिया और कहा कि जहाँ पर कुछ अंतर्राष्ट्रीय और कुछ राष्ट्रीय स्तर के बैंक हों वहाँ पर छोटे स्थानीय बैंकों को प्रारंभ करने पर भी बल दिया जाना चाहिए जिससे किसी राज्य के स्थानीय व्यापार, उद्योग तथा कृषि को बढ़ावा मिल सके। इस कारण से रिजर्व बैंक द्वारा नचिकेत मोर समिति का गठन किया गया। इस समिति ने छोटे व्यवसायों और कम आय वाले परिवारों के लिए व्यापक वित्तीय सेवाओं और भुगतान बैंकों को लाइसेंस देने संबंधी बात कही। इस समिति की अनुशंसा के आधार पर ही सरकार द्वारा इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक अर्थात् आई.पी.पी.बी. की शुरुआत हुई थी। बैंकों में सुधार के लिए बेसल 3 मानक को लाया गया। बेसल 3 बैंकिंग प्रणाली के उन पक्षों को सुधारने का प्रयास करता है जिसके कारण पूरे विश्व को आर्थिक मंदी का सामना करना पड़ा। इसके पीछे का गणित यह है कि विकसित अर्थव्यवस्थाओं को अपनी वित्तीय प्रणाली को बचाने के लिए बहुत धनराशि खर्च करनी पड़ती है। इसके लिए ये देश नहीं चाहते कि आने वाले समय में इस तरह की समस्या का सामना फिर से करना पड़े। इन सब वजहों से बैंकिंग व्यवस्था को कुछ इस प्रकार से नियंत्रित

करना होगा जिससे न केवल बैंक की पूंजी में गुणात्मक सुधार हो बल्कि बैंकों की हानि सहने की क्षमता में भी बढ़ोत्तरी हो। आज के समय में बैंकिंग व्यवहार और उपभोक्ताओं की जरूरतों में परिवर्तन जिस तरीके से हो रहे हैं, वैसी स्थिति में बैंकों का भविष्य भी संकट के घेरे में है। अब तो यह भी माना जा रहा है कि परंपरागत बैंकिंग का दौर खत्म हो चुका है और बैंकलेस बैंकिंग अवधारणा मजबूत हुई है। इसी संदर्भ में एक बार बिल गेट्स ने कहा था कि बैंकिंग तो जरूरी है किन्तु बैंक नहीं। आज तकनीक ने बैंकों के स्वरूप को एकदम बदल दिया है। इसमें बिग डेटा, क्लाउड कंप्यूटिंग, स्मार्टफोन और ऐसे अन्य नवाचार शामिल हैं। मोबाइल बैंकिंग के आने से तो ग्राहकों और बैंक के बीच संवाद के तरीके में बहुत बदलाव आ गया है। मोबाइल बैंकिंग के द्वारा घर से दूर रहकर भी अपने बैंक के खातों की जानकारी ली जा सकती है। किसी भी समय खाते से पैसों को ट्रांसफर करना, बिलों का भुगतान इत्यादि किया जा सकता है। यह सुविधा 24 घंटे उपलब्ध होती है। इसी प्रकार एटीएम मशीनों ने बैंकिंग व्यवस्था को बहुत हद तक सरल, सुरक्षित और सुविधाजनक बना दिया है। कैशलेस अर्थव्यवस्था ने बैंकिंग स्वरूप में और बड़ा परिवर्तन किया है। इससे एक ओर जहाँ लोगों को लंबी कतारों से मुक्ति के साथ-साथ समय की बचत हुई तो वहीं दूसरी

ओर कालेधन को रोकने में बहुत हद तक मदद भी मिली। इसके कारण अर्थव्यवस्था में पारदर्शिता आयी। कैशलेस व्यवस्था आने के कारण रुपया लोगों के पास से तो हटा ही किन्तु उसका स्थान प्लास्टिक मुद्रा ने लिया। प्लास्टिक मुद्रा ने लोगों की समस्या के समाधान के साथ-साथ पर्यावरण को तो लाभ पहुँचाया ही इसके साथ ही साथ इससे अर्थव्यवस्था में तेजी भी आयी। कैशलेस अर्थव्यवस्था को पेमेंट्स बैंकों ने भी आगे बढ़ाने में मदद की है। परिणामस्वरूप समाज के अंतिम कतार के व्यक्तियों को आर्थिक विकास की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए बैंकों ने समुचित प्रयास किया है। इस प्रयास में माइक्रो यूनिट्स डेवलपमेंट एंड रिफाइनेंस एजेंसी लिमिटेड बैंक यानि मुद्रा बैंक का गठन भी बहुत महत्व रखता है। यह सूक्ष्म इकाइयों के विकास तथा पुनर्वित्तपोषण से संबंधित गतिविधियों के लिए भारत सरकार द्वारा गठित एक नई संस्था है। इसी प्रकार स्वयं सहायता समूह भी वित्तीय समावेशन की प्रक्रिया को मजबूत करते हैं जो कि समाज के पिछड़े एवं अंतिम कतार के लोगों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है।

अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि वैश्वीकरण के दौर में बैंकों का स्वरूप लगातार बदल रहा है। पहले जहाँ बैंकों में लंबी-लंबी कतारें लगी रहती थीं, वहीं

अब तकनीक ने इस कार्य को सरल और सुगम बना दिया है। तकनीक का प्रयोग करके पेमेंट बैंकों ने इस कार्य को और आसान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आधुनिक बैंकिंग विशेषकर कैशलेस अर्थव्यवस्था बैंकिंग लेन-देन के डिजिटलीकरण के दौर में चिंता का विषय जरूर है। परन्तु सूचना प्रौद्योगिकी विभाग ने आईआईटी जैसे संस्थानों के साथ मिलकर विभिन्न तरीकों से इससे निपटने के प्रयास किए हैं। जन-धन योजना और डायरेक्ट बेनीफिट ट्रांसफर जैसी योजनाओं के माध्यम से बैंकिंग के जरिए वित्तीय समावेशन पर सरकार बहुत जोर दे रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकों की पहुँच न हो पाना भी चिंता का विषय है। क्योंकि दुर्गम और कठिन क्षेत्र होने के कारण कई क्षेत्रों में अभी भी बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध नहीं हैं। सरकार ने बड़ी संख्या में बैंकिंग कॉरस्पॉन्डेंट की नियुक्ति कर इस समस्या का समाधान करने का प्रयास किया है। ये बैंकिंग कॉरस्पॉन्डेंट बैंकों तथा ग्रामीण जनता के बीच महत्वपूर्ण कड़ी का काम करते हैं। कुल मिलाकर, भारत का आज का बैंकिंग स्वरूप बदलते परिवेश में नए कलेवर अपना रहा है। ऐसे में यह महत्वपूर्ण है कि यह कलेवर भारतीय जनता के सामाजिक-आर्थिक विकास को और बेहतर बनाने में अपनी सक्रिय भूमिका निभाने के

साथ-साथ नई गति भी प्रदान करने में सहायक होगा।

मीडिया

प्रिया साव

कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

लगभग कहूँ तो आज
मीडिया या टी. वी. साहित्य की
बन चुकी है एक विधा
समझना आसान नहीं
फिर भी कहूँ तो यह कि
जिस प्रकार एक व्यथा
तैयार है कहानी या महापाठ में
या सर्जन होता है उसका
कविता आपके माध्यम से
गद्य या पद्य में जो भी
व्यथा में रोता है किसान
बूढ़ी बीमार माँ, सताए गए लोग,
आदिवासी, माओवादी,
अर्थहीन, बुद्धिहीन, नामहीन तबके के जमात
इस देश में या उस देश में
यह अधिकांश दिखाई पड़ता है
यह रूप दिखाई पड़ता है
यह सब दिखाई पड़ता है
आज भी, अब भी साहित्य में
मीडिया में, मन में
और यहाँ तक की लगभग
प्रत्येक में
यह तय है

साहित्य का दूसरा रूप एंव पाठ है मीडिया।

कृष्णा



श्रीमती मेधा रानी
पत्नी-भागीरथ प्रसाद
डी.ई.ओ

खुल गई सारी बेड़ियाँ, खुल गए सारे द्वार,
गहरी नींद में सो रहे, सारे पहरेदार।

जन्म हुआ श्री कृष्ण का, धरती पे पधार,
संग पिता के चल दिए, कर यमुना को पार।

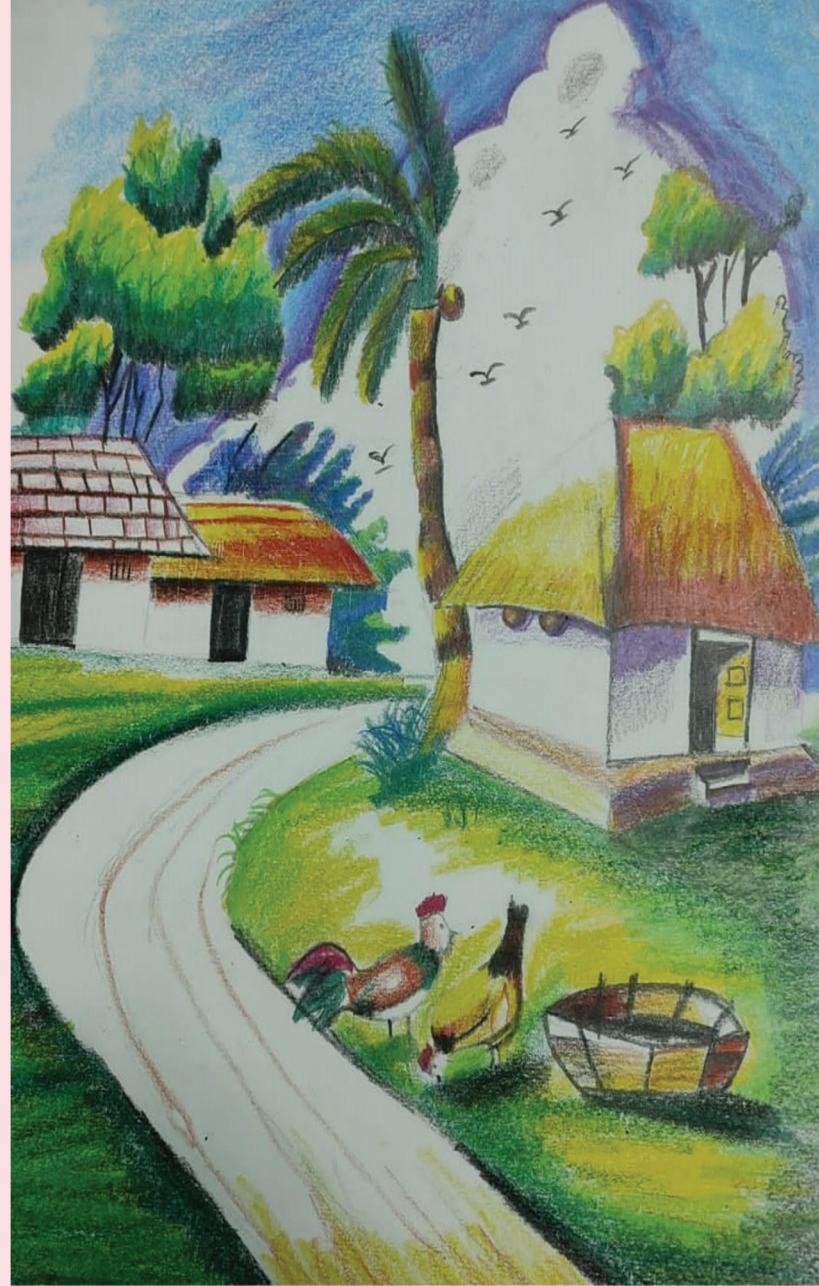
चरण कृष्ण के लगते ही, शांत पड़ गया ज्वार,
चल पड़े वासुदेव जी, कर कृष्ण को सिरोधार।

यमुना ने रास्ता दिया, नाग था बुलावार,
माया ऐसी कृष्ण की, जैसे चमत्कार।

सहज भाव से पहुँच गए, वासुदेव नंद के द्वार,
सौंप कृष्णा नंद राजा को, लौटे कारागार।

ऐसी रचना कृष्ण की, कहलाए नंद कुमार,
जन्म होते ही कान्हा को, मिल गए दो परिवार।।

सुश्री रिद्धिका देवकोटा, सुपुत्री- श्री राज्यपाल देवकोटा,
सहायक लेखा अधिकारी द्वारा चित्रकारी।



भारत में रविवार की छुट्टी किसने दिलाई?

श्री पार्थ ज्योति दे

सहायक लेखा अधिकारी

भारतवर्ष में एक ऐसा समय था, जब सप्ताह न सोमवार से शुरू होता था और न ही रविवार से। सप्ताह की शुरुआत या अंत कहीं से भी कहीं पर भी मान सकते थे। क्योंकि कामकाजी व्यक्तियों को प्रत्येक दिन काम करना होता था। किसी भी तरह की साप्ताहिक अवकाश की कोई व्यवस्था नहीं थी। इसके पीछे का इतिहास जानना बहुत आवश्यक है। कई लोगों की कठिन लड़ाई और संघर्ष के बाद ही ऐसा संभव हो पाया है कि रविवार के दिन लोग अपने घरों में बैठकर विश्राम करते हैं और अपने परिवार के साथ समय व्यतीत करते हैं।

जिस व्यक्ति के कारण हमें छुट्टी हासिल हुई है, उन महापुरुष का नाम है नारायण मेघाजी लोखंडे। नारायण मेघाजी लोखंडे का जन्म 1848 में तत्कालीन विदर्भ के पुणे जिले के कन्हेरसर में एक गरीब फूलमाली जाति के साधारण परिवार में हुआ था। कालान्तर में उनका परिवार आजीविका के लिये थाणे आ गया था। यहीं से लोखंडे जी ने मेट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण वे उच्च शिक्षा जारी न रख सके और गुजर-बसर के लिए उन्होंने आरम्भ में रेलवे के डाक विभाग में नौकरी कर ली। बाद में वे बॉम्बे टेक्सटाइल मिल में स्टोर कीपर के रूप में कुछ समय तक कार्य किया। यहीं पर लोखंडे जी को श्रमिकों की दयनीय स्थिति को करीब से देखने, समझने, महसूस करने और इस सम्बन्ध

में विचार करने का अवसर मिला और वे कामगारों की तमाम समस्याओं से अवगत हुए व खुद भी बहुत करीब से उसे महसूस किया। इसी समय से श्रमिकों की दशाओं और उनके कारणों को समझने की दिशा में उनकी रुचि जाग्रत हुई। उन्होंने सन् 1880 में 'दीन बंधु' नामक जर्नल के सम्पादन का दायित्व ग्रहण किया और उसे वो अपनी मृत्यु तक सन् 1897 तक अनवरत् निभाते रहे। समाज के उपेक्षित, असुरक्षित व असंगठित वर्गों को संगठित करने का अभियान उन्होंने यहीं से प्रारम्भ किया जो जीवन पर्यन्त चलता रहा। सन् 1884 में 'बॉम्बे हैंड्स एसोसिएशन' नाम से भारत में उन्होंने प्रथम ट्रेड यूनियन की स्थापना की और इसके अध्यक्ष भी रहे।

नारायण मेघाजी लोखंडे जी का यह मानना था कि सप्ताह में सात दिन हम अपने परिवार के लिए काम करते हैं। किंतु जिस समाज की बदौलत हमें नौकरियाँ मिली हैं, उस समाज की समस्या छुड़ाने के लिए हमें एक दिन छुट्टी मिलनी चाहिए। उसके लिए उन्होंने ब्रिटिश सरकार के सामने 1881 में प्रस्ताव रखा। लेकिन ब्रिटिश सरकार यह प्रस्ताव मानने के लिए तैयार नहीं थे। इसलिए, अंत में नारायण मेघाजी लोखंडे जी को इस रविवार की छुट्टी के लिए 1881 में आन्दोलन करना पड़ा। ये आन्दोलन दिन व दिन बढ़ते गया। लगभग 8 साल ये आन्दोलन चलता रहा। आखिरकार 10 जून 1890 को ब्रिटिश सरकार ने आदेश जारी

नवीन पूर्वाचल संदेश

किया कि सप्ताह में एक दिन सबकी छुट्टी होगी। इसके बाद रविवार को छुट्टी करने का फैसला हुआ था। इसके साथ ही प्रत्येक दिन दोपहर के वक्त आधे घंटे का आराम भी दिया गया, जिसे हम आज लंच ब्रेक कहते हैं।

विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों में लोखंडे जी के सक्रिय योगदान को मान्यता प्रदान करते हुये उन्हें तत्कालीन ब्रिटिश भारत सरकार द्वारा 'जस्टिस ऑफ पीस' की उपाधि से सम्मानित किया गया था। उन्हें हिंदुओं और मुसलमानों के बीच दंगों के दौरान उनके काम के लिए 1895

में राव बहादुर की उपाधि से भी सम्मानित किया गया था। मई 2005 में लोखंडे जी की स्मृति में भारत सरकार द्वारा एक डाक टिकट जारी किया गया। इस अवसर पर डाक टिकट जारी करते हुये प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी ने लोखंडे जी के व्यक्तित्व को अनुकरणीय बताते हुए आज के दौर के श्रमिक नेताओं से अनुरोध किया कि वे सामाजिक बदलाव लाने व लोगों के सशक्तिकरण के लिए लोखंडे जी के दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करें।



भिक्षावृत्ति

श्रीमती रानी गिरि
पत्नी- श्री पुरुषोत्तम गिरि
वरिष्ठ अनुवादक

जीवन यापन हेतु किसी के आगे हाथ फैलाना अपने-आप में अपने जमीर को मारने जैसा लगता है। लेकिन ये किसी से छुपा नहीं है कि भिक्षावृत्ति के उदाहरण अक्सर सड़क किनारे, धार्मिक स्थलों के आस-पास या चौक-चौराहों पर दिख जाते हैं। एक संजीदा नागरिक के रूप में आपके मन में ये सवाल उठ सकता है कि क्या भीख मांग रहे ये लोग अपनी विवशता के कारण ऐसी हालत में हैं या फिर ये किसी साजिश के शिकार हैं। आश्चर्य की बात तो ये है कि इस संबंध में अभी तक कोई बेहतर मैकेनिज्म नहीं बन पाया है। दिल्ली उच्च न्यायालय ने भिक्षावृत्ति को अपराध घोषित करने वाले कानून बॉम्बे प्रिवेंशन ऑफ़ बेगिंग एक्ट, 1959 [Bombay Prevention of Begging Act, 1959] की 25 धाराओं को समाप्त कर दिया है। साथ ही, भिक्षावृत्ति के अपराधीकरण को असंवैधानिक करार दिया है। उच्च न्यायालय ने यह निर्णय भिखारियों के मौलिक अधिकारों और उनके आधारभूत मानवाधिकारों के संदर्भ में दायर दो जनहित याचिकाओं की सुनवाई के दौरान दिया। देश में अब तक भिक्षावृत्ति के संदर्भ में कोई केंद्रीय कानून नहीं है। बॉम्बे प्रिवेंशन ऑफ़ बेगिंग एक्ट, 1959 को ही आधार बनाकर 20 राज्यों और 2 केंद्रशासित प्रदेशों ने

अपने कानून बनाए हैं। दिल्ली भी इनमें से एक है। वहीं दूसरा केंद्रशासित प्रदेश है दमन और दीव। भिक्षावृत्ति का सबसे साधारण वर्गीकरण ऐच्छिक भिक्षावृत्ति और अनैच्छिक भिक्षावृत्ति के रूप में किया जा सकता है। बहुत से ऐसे लोग हैं जो आलस्य, काम करने की कमजोर इच्छा शक्ति आदि के कारण भिक्षावृत्ति अपनाते हैं। भारत में कुछ जनजातीय समुदाय भी अपनी आजीविका के लिए परम्परा के तौर पर भिक्षावृत्ति को अपनाते हैं। लेकिन भीख मांगने वाले सभी लोग इसे ऐच्छिक रूप से नहीं अपनाते। दरअसल, गरीबी, भुखमरी तथा आय की असमानताओं के चलते देश में एक वर्ग ऐसा भी है, जिसे भोजन, कपड़ा और आवास जैसी आधारभूत सुविधाएँ भी प्राप्त नहीं हो पातीं। यह वर्ग कई बार मजबूर होकर भीख मांगने का विकल्प अपना लेता है। भारत में आय की असमानता और भुखमरी की कहानी तो ग्लोबल स्तर की कुछ रिपोर्टों से ही जाहिर हो जाती है। दिसम्बर, 2017 में प्रकाशित वर्ल्ड इनइक्वैलिटी रिपोर्ट (World Inequality Report) के अनुसार भारत के 10% लोगों के पास देश की आय का 56% हिस्सा है। साथ ही भारत को भुखमरी के मामले में गंभीर स्थिति वाले देशों में रखा गया है। कई बार गरीबी से पीड़ित ऐसे लोगों की मजबूरी का फ़ायदा कुछ गिरोह भी उठाते हैं। ऐसे गिरोह संगठित रूप से भिक्षावृत्ति के रैकेट चलाते हैं। ये गिरोह गरीब व्यक्तियों को लालच देकर, डरा-धमकाकर, नशीले ड्रग्स देकर, तथा मानव तस्करी के द्वारा लाए गए लोगों को शारीरिक रूप से अपंग बनाकर भीख मांगने पर मजबूर करते हैं। बॉम्बे प्रिवेंशन ऑफ़ बेगिंग

एक्ट, 1959 की कुछ धाराओं में फेरबदल कर दिल्ली उच्च न्यायालय ने ऐसे गरीब लोगों के जीवन जीने के अधिकार की रक्षा का एक सार्थक प्रयास किया है।

बॉम्बे प्रिवेंशन ऑफ़ बेगिंग अधिनियम की सबसे बड़ी बात यह है कि यह भिक्षावृत्ति को अपराध घोषित करता है। साथ ही पुलिस प्रशासन को शक्ति देता है कि वह ऐसे भीख मांगने वाले व्यक्ति को पकड़कर किसी पंजीकृत संस्था में भेज सके। इस अधिनियम में भिक्षावृत्ति की परिभाषा में ऐसे किसी भी व्यक्ति को शामिल किया गया है जो गाना गाकर, नृत्य करके, भविष्य बताकर, कोई सामान देकर या इसके बिना भीख मांगता है या कोई चोट, घाव आदि दिखाकर, बिमारी बताकर भीख मांगता है। इसके अतिरिक्त जीविका का कोई दृश्य साधन न होने और सार्वजनिक स्थान पर इधर-उधर भीख मांगने की मंशा से घूमना भी भिक्षावृत्ति में शामिल है। इस कानून में भिक्षावृत्ति करते हुए पकड़े जाने पर पहली बार में तीन साल तक के लिए और दूसरी बार में दस साल तक के लिए व्यक्ति को सजा के तौर पर पंजीकृत संस्था में भेजे जाने का नियम है। इसके साथ ही पकड़े गए व्यक्ति के आश्रितों को भी पंजीकृत संस्था में भेजा जा सकता है। इन संस्थाओं को भी कई प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त हैं, जैसे-संस्था में लाए गए व्यक्ति को सजा देना, कार्य करवाना आदि। इन नियमों का पालन न करने पर व्यक्ति को जेल भी भेजा जा सकता है। ये सभी प्रावधान महाराष्ट्र में सार्वजनिक स्थानों पर भीख मांग रहे और कुष्ठ रोग जैसी बीमारियों से पीड़ित भिखारियों को

एक निश्चित स्थान पर ले जाकर उन्हें इलाज व अन्य सुविधाएँ देने के लिये लाये गये थे। लेकिन शीघ्र ही यह कानून गरीबी, अपंगता, गंभीर बीमारियों जैसी किसी मजबूरी के कारण भिक्षावृत्ति अपनाने वालों के खिलाफ हथियार बन गया। प्रशासन ने इसका प्रयोग सार्वजनिक स्थानों से भिखारियों को हटाने के लिए करना शुरू कर दिया। उदाहरण के लिये 2010 में कॉमनवेल्थ खेलों के आयोजन के दौरान दिल्ली से भिखारियों को बाहर निकालने के लिए इसका बड़े पैमाने पर प्रयोग किया गया। दंडात्मक प्रावधानों के तहत भिखारियों को पकड़ा तो जाता है लेकिन उनके पुनर्वास के लिये कोई ठोस कदम नहीं उठाए जाते।

पहली समस्या भिक्षावृत्ति की परिभाषा को लेकर है। गायन, नृत्य, भविष्य बताकर आजीविका कमाना कुछ समुदायों के लिये व्यवसाय है। यह मुख्य धारा के व्यवसायों से मेल नहीं खाता, सिर्फ इसलिए ऐसे लोगों को अपराधी मान लेना किसी भी प्रकार से उचित नहीं है। दूसरी बात यह है कि जीविका का कोई दृश्य साधन ना होना और सार्वजनिक स्थान पर भीख मांगने की मंशा से घूमने को अपराध मानना किसी व्यक्ति को गरीब दिखने के कारण दण्डित किये जाने जैसा है। साथ ही यह कानून उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोप में स्थापित poor houses की विचारधारा को अपनाता है। इन poor houses में गरीब और लाचार लोगों को रखा जाता था। यूरोप में पहले भिक्षावृत्ति का अपराधीकरण किया गया, फिर उन्हें सार्वजनिक स्थानों से पूरी तरह हटा दिया गया। किसी गरीब और मजबूर व्यक्ति को उसकी इच्छा के विरुद्ध

नवीन पूर्वाचल संदेश

किसी स्थान पर ले जाकर रखना, और सार्वजनिक स्थान पर जाने से रोकना उस व्यक्ति के मौलिक अधिकारों का हनन ही तो है। जबकि भारतीय संविधान अनुच्छेद 14 के तहत समानता का अधिकार और अनुच्छेद 19 के तहत स्वतंत्रता का अधिकार देता है। इसके अतिरिक्त भारतीय संविधान में प्रस्तावना, मौलिक अधिकारों, तथा राज्य के नीति निदेशक तत्वों के तहत भारत की एक कल्याणकारी राज्य की रूपरेखा सामने आती है। ऐसे में एक कल्याणकारी राज्य का दायित्व ये होना चाहिए कि वह अपने नागरिकों की भोजन, आवास, रोजगार जैसी जरूरतों को पूरा कर उन्हें सामाजिक सुरक्षा प्रदान करे। यदि हम भारत में भिखारियों की संख्या पर ध्यान दें तो 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 4 लाख से भी अधिक भिखारी हैं। भिखारियों की इतनी बड़ी संख्या दिखाती है कि भारत अपनी कल्याणकारी राज्य की भूमिका निभाने में पूरी तरह सफल नहीं रहा है। इसलिए समाज के सबसे कमजोर और हाशिये पर खड़े तबके को अपराधी घोषित करना किसी भी प्रकार से न्याय संगत नहीं है। इन्हीं सब पक्षों के आधार पर दिल्ली उच्च न्यायालय ने अपना हालिया निर्णय दिया है। हालांकि भिक्षावृत्ति का रैकेट चलाने वाले गिरोहों के खिलाफ कठोर कदम उठाने के लिए सरकार कोई भी कानून बना सकती है। इस पर उच्च न्यायालय ने कोई रोक नहीं लगाई है।

उच्च न्यायालय ने भी कहा है कि सबसे पहले ऐच्छिक भिक्षावृत्ति और मजबूरीवश अपनाई गई भिक्षावृत्ति में अंतर किया जाना आवश्यक है। साथ ही इन दोनों से निपटने के

लिए अलग-अलग रणनीति बनाए जाने की जरूरत है। इसके लिए वास्तविक स्थिति का पता व्यापक सर्वेक्षण के जरिये लगाया जा सकता है। इस सर्वेक्षण से प्राप्त आँकड़ों के सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण के आधार पर एक केंद्रीय कानून बनाया जाना चाहिए। इस सन्दर्भ में 2016 में केंद्र सरकार ने पहला प्रयास The Persons in Destitution [Protection, Care, Rehabilitation] Model Bill, 2016 लाकर किया था। इसके अलावा गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी जैसी समस्याओं से मजबूर लोगों तक मौलिक सुविधाओं की पहुँच सुनिश्चित की जानी चाहिए। इसके लिए वास्तविक लाभार्थियों की पहचान और सेवाओं की लीक प्रूफ डिलीवरी जरूरी है। दूसरी ओर गंभीर बिमारी से पीड़ित, अपंगता से ग्रसित और छोटी उम्र के बच्चे जो भिक्षावृत्ति को अपना चुके हैं, उनके पुनर्वास के लिए व्यापक स्तर पर प्रयास किए जाने की जरूरत है। इसके लिए पुनर्वास गृहों की स्थापना करके उनमें आवश्यक चिकित्सीय सुविधाएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए। साथ ही उनकी मौलिक जरूरतों को पूरा करते हुए उन्हें कौशल प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। तभी वे भविष्य में समाज की मुख्य धारा का हिस्सा बन सकेंगे। इस संबंध में बिहार जैसे राज्य में चलने वाली मुख्यमंत्री भिक्षावृत्ति निवारण योजना का सन्दर्भ लिया जा सकता है। इस योजना में भिखारी को गिरफ्तार करने के स्थान पर उन्हें Open House में भेजकर उनके पुनर्वास की व्यवस्था किये जाने का प्रावधान है। जहाँ तक बात संगठित तौर पर चलने वाले भिक्षावृत्ति रैकेटों की है तो इनको मानव तस्करी और अपहरण जैसे

नवीन पूर्वाचल संदेश

अपराधों के साथ जोड़ कर देखा जाना चाहिए। दूर-दराज़ के इलाकों से लोगों को खरीदकर या अपहरण कर लाया जाता है और उन्हें भिक्षावृत्ति में लगाया जाता है। इसलिए इससे निपटने के लिए राज्यों के बीच सूचनाएँ साझा करने हेतु एक तंत्र की भी आवश्यकता है। इसके साथ ही इस कमजोर तबके के प्रति संवेदनशीलता भी जरूरी है।



चुटकुली

सुशांत बी रसाईली
आठवी 'ब'

1. शिक्षक (छात्र से): इतनी पिटाई के बाद तुम हंस रहे हो?
पवन (शिक्षक से) : गाँधी जी ने कहा है मुसीबत का हंसकर सामना करना चाहिए।
2. पिता(पुत्र से) : आज तक तुमने ऐसा कोई काम नहीं किया जिससे मेरा सर ऊंचा हो।
पुत्र(पिता से) : एक बार मैंने आपके सर के नीचे तकिया रखी थी।
3. पिता (पुत्र से) : तुम्हारा रिजल्ट कैसा रहा ?
पुत्र (पिता से) : जी वह प्रिंसिपल का बेटा फेल हो गया।
पिता : मैं तुम्हारा रिजल्ट पूछ रहा हूँ।
पुत्र : वो रवि अंकल का बेटा फेल हो गया ।
पिता : लेकिन तुम्हारा रिजल्ट क्या हुआ ?
पुत्र : डाक्टर का बेटा भी फेल हो गया।
पिता : मैं तो तुम्हारे बारे में पूछ रहा हूँ?
पुत्र : तो आप कौन से प्रधानमंत्री है? जो आपका बेटा पास हो जाए।



रत्ननामधन्य शिल्पी भारत रत्न भूपेन हाजरिका



श्री दीननाथ साह,
टंकक/ लिपिक

भूपेन हाजरिका भारत के पूर्वोत्तर राज्य असम से एक बहुमुखी प्रतिभा गीतकार, संगीतकार और गायक थे। इसके अतिरिक्त वे असमिया भाषा के कवि, फिल्म निर्माता, लेखक और असम की संस्कृति और संगीत के अच्छे जानकार भी रहे थे। उन्होंने कविता लेखन, पत्रकारिता, गायन, फिल्म निर्माण आदि अनेक क्षेत्रों में काम किया। अपनी मूल भाषा असमिया के अतिरिक्त भूपेन हाजरिका जी हिंदी, बंगला समेत कई अन्य भारतीय भाषाओं में गाना गाते थे।

हाजरिका जी का जन्म असम के तिनसुकिया की शदिया में हुआ था। हाजरिका जी के पिताजी का नाम नीलकांत एवं माताजी का नाम शांतिप्रिया था। उनके पिताजी

मूलतः असम के शिवसागर जिले के नाजिरा शहर से थे। दस संतानों में सबसे बड़े, हाजरिका का संगीत के प्रति लगाव अपनी माता के कारण हुआ, जिन्होंने उन्हें पारंपरिक असमिया संगीत की शिक्षा दी। बचपन में ही उन्होंने अपना प्रथम गीत लिखा और दस वर्ष की आयु में उसे गाया। साथ ही उन्होंने असमिया चलचित्र की दूसरी फिल्म इंद्रमालती के लिए वर्ष 1931 में बारह वर्ष की आयु में काम भी किया।

हाजरिका जी ने करीब 13 साल की आयु में तेजपुर से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। वर्ष 1942 में गुवाहाटी के कॉटन कॉलेज से उन्होंने इंटरमीडिएट किया। वर्ष 1946 में हाजरिका जी ने बनारस हिंदु विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर किया। इसके बाद पढ़ाई के लिए वे वर्ष 1949 में विदेश गए। न्यूयॉर्क स्थित कोलंबिया विश्वविद्यालय से उन्होंने 1950 पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त किए।

कोलंबिया विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान, हाजरिका जी प्रियंवदा पटेल से मिली और उन्होंने 1950 में विवाह कर ली। दिनांक 05 नवंबर, 2011 को मुंबई में उनकी देहांत हुई और ब्रह्मपुत्र नदी के पास उनका अंतिम संस्कार किया गया। उनके अंतिम संस्कार में प्रायः पाँच लाख लोग शामिल हुए थे।

हाजरिका जी को मरणोपरांत 2012 में भारत के दूसरे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म विभूषण और 2019 में भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी सिनेमा में असम और पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति और लोक

नवीन पूर्वाचल संदेश

संगीत को पेश करने का श्रेय श्रद्धेय भूपेन हाजरिका जी को है, उन्होंने ऐसे गीतों की रचना की और गाया जो मानवता और सार्वभौमिक भाईचारे के विषयों द्वारा चिह्नित हैं। हिंदी सिनेमा में उनका एक प्रमुख योगदान एक पल, रुदाली तथा दमन जैसी प्रसिद्ध फिल्मों के लिए संगीत तैयार करना था। उन्हें 1993 में रुदाली के लिए सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशक राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने 1998 से 2003 तक संगीत नाटक अकादमी में अध्यक्ष का पद संभाला। वर्ष 1992 में उन्हें दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

9वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में शकुंतला के लिए असमिया में सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का पुरस्कार और वर्ष 1975 में चमेली मेमसाब के लिए सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन का राष्ट्रीय पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। उन्हें वर्ष 1977 में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्ष 1979 में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले लोक कलाकार के लिए ऑल इंडिया क्रिटिक एसोसिएशन अवार्ड से सम्मानित किया गया। वर्ष 1979 में अरुणाचल प्रदेश की राज्य सरकार ने "जनजातीय कल्याण हेतु उत्कृष्ट योगदान और सिनेमा तथा संगीत के माध्यम से आदिवासी संस्कृति के उत्थान" के लिए स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। वर्ष 1987 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्ष 2011 में मुक्तियोद्धा पदक - बांग्लादेश सरकार द्वारा "स्वतंत्रता संग्राम के मित्र" पुरस्कार के रूप में सम्मानित किया गया।

वर्ष 2001 में हाजरिका जी को पद्म भूषण उपाधि से सम्मानित किया गया। उन्हें वर्ष 2008 में संगीत नाटक अकादमी फेलोशिप प्रदान किया गया, वर्ष 2009 में असम रत्न उपाधि से विभूषित किया गया। कोलकाता में वर्ष 2002 में जीवनभर की उपलब्धि के लिए 10वां कलाकार पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। हाजरिका जी को 2013 में भारतीय डाक द्वारा स्मारक डाक टिकटों से सम्मानित किया गया था।

उन्होंने 1967-72 के दौरान नाउबोइचा निर्वाचन क्षेत्र से असम विधान सभा में एक विधायक (स्वतंत्र) के रूप में भी कार्य किया। वर्ष 1993 में उन्हें असम साहित्य सभा का अध्यक्ष के रूप में चयन किया गया।

उन्होंने स्टार टीवी के लिए एक टेली-सीरियल डॉन (Dawn) और Glimpses of the Misty East on the socio-economic and cultural progress in North-East India from 1947 to 1997 नामक एक 18-भाग वाली वृत्तचित्र का निर्माण किया।

असम के ब्रह्मपुत्र नदी पर बने भारत के सबसे लंबे सड़क पुल ढला- शदिया को भूपेन हाजरिका सेतु के नाम से जाना जाता है। वर्ष गुवाहाटी के बर्षापारा क्रिकेट स्टेडियम का नाम बदलकर डॉ भूपेन हाजरिका स्टेडियम कर दिया गया।

हालांकि वे अब हमारे बीच नहीं हैं, किंतु उनके गीत लोगों के हृदय में जीवित रहेंगे। बहुमुखी प्रतिभा के अधिकारी भूपेन हाजरिका जी के अपार योगदान को नहीं भूल सकते।



माजुली

श्रीमती स्निग्धा फुकन
हिन्दी अधिकारी

माजुली असम के ब्रह्मपुत्र नदी के मध्य में बसा एक सुरम्य, हरे-भरे और प्रदूषण मुक्त नदी द्वीप है। यह दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित करता है। यह वर्ष 2016 में भारत में जिला बनने वाला पहला द्वीप बन गया है। माजुली को विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप के रूप में दर्शाया जाता रहा है। किंतु वर्तमान माजुली प्राकृतिक और मानवजनित कारणों से दिन प्रतिदिन सिकुड़ रहा है।

माजुली पूर्वी असम का नव वैष्णव विचारधारा का मुख्य केंद्र है। माजुली 16वीं शताब्दी से असमिया सभ्यता की सांस्कृतिक राजधानी रही है। 16वीं शताब्दी के समाज सुधारक श्रीमंत शंकरदेव की यात्रा का वर्णन करने वाले लिखित अभिलेखों पर आधारित है। महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव ने वैष्णववाद नामक

हिंदू धर्म के एक एकेश्वरवादी रूप का प्रचार किया और इस द्वीप पर मठों और आश्रमों की स्थापना की, जिन्हें सत्र के रूप में जाना जाता है। इन सत्रों की स्थापना के साथ ही यह द्वीप जल्द ही वैष्णववाद का प्रमुख केंद्र बन गया।

माजुली की आबादी में आदिवासी, गैर-आदिवासी और अनुसूचित जातियां शामिल हैं। यहाँ असमिया, मिसिंग और देवरी भाषाएँ बोली जाती हैं। अंतर्निहित कमियों का सामना करने के बावजूद, चिकित्सा केंद्रों और शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना के साथ, आधुनिकता ने इस द्वीप को छुआ है।

यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता और जैव विविधता को देखने और अध्ययन के लिए विश्व भर से लोग आते हैं। यहाँ अनेक प्रजातियों के दुर्लभ और लुप्तप्राय प्रवासी पक्षियों का आवागमन चलता रहता है। इनमें हवासील (पेलिकान), साइबेरियन क्रेन और ग्रेटर एडजुटेड सारस जैसे प्रवासी पक्षी शामिल हैं। इन पक्षियों को देखने के लिए नवंबर से मार्च के बीच का समय सबसे उत्तम होता है। यहाँ तीन ऐसे जगह हैं माजुली द्वीप के दक्षिण पूर्व इलाका, माजुली द्वीप के दक्षिण पश्चिम इलाका और माजुली द्वीप के उत्तरी भाग जहाँ से इन पक्षियों को देखा जा सकता है।

यह द्वीप असमिया नव-वैष्णव संस्कृति का केंद्र रहा है, जिसकी शुरुआत 15 वीं शताब्दी के आसपास श्रद्धेय असमिया संत महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव और उनके शिष्य माधवदेव ने की थी। संत द्वारा निर्मित कई सत्र हैं जो असमिया संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं। जब

शंकरदेव पहली बार माधवदेव से मिले उसे 'मणिकंचन संयोग' के रूप में जाना जाता है, तब संत माधवदेव ने माजुली में शरण ली और पश्चिम माजुली के बेलगुरी में कुछ महीने बिताए। महापुरुष शंकरदेव ने बेलगुरी, माजुली में पहला सत्र स्थापित किया। "मणिकंचन संयोग" के बाद, पैसठ सत्र स्थापित किए गए थे। हालांकि, आज मूल पैसठ में से केवल बाईस ही चालू हैं। असम में छह सौ पैसठ मूल सत्रों में से पैसठ माजुली में स्थित थे। पर्यटक इन सत्रों में प्राचीन असमिया कलाकृतियों, अस्त्र-शस्त्र, बर्तनों, वस्त्र, आभूषण और हस्तशिल्प के व्यापक संकलन को देख सकते हैं और असम की विरासत को महसूस कर सकते हैं।

श्री श्री दक्षिणपात सत्र:- इस सत्र को वनमाली देव ने स्थापित किया था। वे रासलीला अथवा रास उत्सव के समर्थक थे। यह आहोम शासक द्वारा संरक्षित प्रमुख सत्र था। इस प्राचीन शिक्षा केंद्र में साल भर हजारों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं। असम का एक प्रमुख त्योहार, रसोत्सव, यहाँ बहुत उत्साह और जोश के साथ मनाया जाता है। पूर्णिमा की रात को जाने वाली रासलीला महोत्सव यहाँ का मुख्य आकर्षण है।

श्री श्री उत्तर कमलाबारी सत्र :- बादुला पद्म आताद्वारा स्थापित किया गया यह सत्र, माजुली द्वीप में कला, संस्कृति, साहित्य और शास्त्रीय अध्ययन का एक केंद्र है। इसकी शाखा उत्तर कमलाबारी सत्र पूरे देश में और विदेशों में सत्रीय नृत्य और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर चुके हैं। यह स्थान कई खूबसूरत

नावों को गढ़ने और पौराणिक पात्रों की मूर्तियां डिजाइन करने के लिए भी लोकप्रिय है।

श्री श्री गढ़मुख सत्र:- यह सत्र लक्ष्मीकांत देवद्वारा स्थापित किया गया था। शरद ऋतु के अंत के दौरान, पारंपरिक रासलीला महोत्सव धूमधाम से मनाया जाता है। प्राचीन हथियार जिन्हें "बरतोप" या तोप कहा जाता है यहाँ संरक्षित किये गए हैं। सत्र में किए जाने वाले अन्य नियमित और अनियमित सांस्कृतिक कार्य हैं बिहू, भगवान कृष्ण की जन्माष्टमी, दिवंगत सत्राधिकार की तिथि, फाल्गुत्सव आदि हैं। सभी अवसरों पर भाओना, नृत्य-गीत करते हैं जो असमीया सत्रीया संस्कृति का निर्माण करते हैं।

श्री श्री आउनीआटी सत्र:- निरंजन पाठक देवद्वारा स्थापित किया गया यह सत्र "पालनाम और अप्सरा नृत्य" के लिए प्रसिद्ध है। यह सत्र पारंपरिक असमिया कलाकृतियों, बर्तनों, आभूषण और हस्तशिल्प के अपने व्यापक संकलन के लिए भी प्रसिद्ध है। श्री श्री आउनीआटी सत्र असम में वैष्णववाद और सत्रीया संस्कृति का केंद्र रहा है। सत्र में नियमित पवित्र प्रथाओं के अतिरिक्त, कई साहित्यिक गतिविधियाँ जैसे वैष्णव संतों की जीवनी रचनाएँ, 'भाओना' की सांस्कृतिक रचनाएँ, 'सत्रीया गीत एवं नृत्य', धार्मिक प्रकाशन और धार्मिक और सामाजिक कार्यों से संबंधित उपदेश मुख्य गतिविधियाँ हैं। आउनीआटी सत्र की सत्रीय अनुष्ठान गतिविधियों में शरण, भजन, नाम-प्रसंग, धार्मिक त्योहार और भगवान गोविंद की प्रसन्नता के लिए संबंधित भक्ति प्रदर्शन सम्मिलित हैं। सत्राधिकारी, डेका सत्राधिकारी, गोविंदपुरीया अपने वैष्णव शिष्यों के साथ एक

नवीन पूर्वाचल संदेश

उदासीन जीवन जीते हैं (ब्रह्मचर्य और विशुद्ध रूप से भगवान को समर्पित)। विभिन्न अवसरों और त्योहारों पर सत्राधिकारी की उपस्थिति में भगवान को समर्पित विशेष प्रदर्शन भी होते हैं। ये त्यौहार पाल-नाम, रास-लीला, जन्माष्टमी, होली, दीवाली, बोहाग बिहू (असमिया नव वर्ष), काति बिहू आदि हैं। पिछले सत्राधिकारियों और वैष्णव गुरुओं की पुण्यतिथि भी अनुष्ठानिक रूप से मनाई जाती है।

श्री श्री नरसिंह सत्र:- सन् 1746 में आहोम राजा प्रमत्त सिंह ने श्री श्री अलेंगी नरसिंह सत्र की स्थापना की।

श्री श्री बेंगेनाआटी सत्र:- सत्र के संस्थापक मुरारी देव थे। यह सांस्कृतिक महत्व और कला का प्रदर्शन करने के लिए एक नामचीन सत्र था। यहाँ आहोम राजा स्वर्गदेव गदाधर सिंह का शुद्ध सोने का बना शाही पोशाक रखा गया है। इसके अतिरिक्त यहाँ स्वर्णनिर्मित एक शाही छाता भी संरक्षित है।

श्री श्री शामगुरि सत्र:- यह सत्र रास उत्सव, भाओना (धार्मिक नाट्य) और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए मुखौटा बनाने के लिए भारत भर में प्रसिद्ध है।

श्री श्री बिहिमपुर सत्र:- ये सत्र "बरगीत", "मटियाखारा", सत्रीय नृत्य जैसे- झुमोरा नृत्य, छाली नृत्य, नटुआ नृत्य, नंदी भृंगी, सूत्रधार, ओझापाली, अप्सरा नृत्य, सत्रीया कृष्ण नृत्य, दशावतार नृत्य आदि के संरक्षक स्थल हैं। ये सभी श्रीमंत शंकरदेव द्वारा प्रख्यापित किये गए थे।

मुलाई काठनि या मुलाई वन, माजुली जिला के एक गाँव कोकिलामुख में स्थित 550

एकड़ का मानव निर्मित जंगल है। जादव मुलाई पायेंग, "भारत के वन पुरुष", जो इस असाधारण काम के पीछे हैं और उन्हीं के नाम पर यह रखा गया है। उन्होंने ब्रह्मपुत्र नदी के एक 'चापोरि' को इस घना जंगल का रूप किया। यह सब प्रयास उन्होंने क्षेत्र में वनस्पति की कमी के कारण सांप के मरने की दुखद घटना को देखने के बाद किया था। उन्होंने अकेले ही पूरे क्षेत्र को बदल दिया जिसके कारण यहां वन्यजीवों की पुनरावृत्ति हुई। इसके लिए उन्हें वर्ष 2015 में पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया गया। मुलाई वन और पायेंग कई वृत्तचित्रों का विषय रहा है।

माजुली में विभिन्न जनजाति के लोग रहते हैं। उनके गाँवों में समय बिताकर उन्हें और उनकी संस्कृति को जाना जा सकता है। उनके खान पान, मुश्किल हालात में जीने की कला आदि को समझा जा सकता है। अली-आए-लिगांग मिसिंग जनजाति द्वारा वसंत ऋतु (फरवरी - मार्च) में मनाया जाने वाला एक त्योहार है। पर्यटक इस त्यौहार का भी काफी लुत्फ उठाते हैं। इस के अतिरिक्त, यहाँ मुखौटे, मिट्टी के बर्तन, मूगा रेशम की बुनाई जैसे हस्तशिल्प और हथकरघा उत्पादों को देखा या खरीदा जा सकता है।

माजुली द्वीप ने असम के साहित्यिक परिदृश्य में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साहित्यकार, नव वैष्णव प्रचारक माधवदेव ने अपने गुरु श्रीमंत शंकरदेव से मुलाकात की, जिसे "मणि कंचन संयोग" कहा जाता है। माधवदेव ने असमिया साहित्य को नामघोसा, बोरगीत और भातिमा आदि से समृद्ध किया।

मुख्य उत्पादन कृषि है, जिसमें धान मुख्य फसल है। माजुली में एक समृद्ध और विविध कृषि परंपरा है, जिसमें चावल की 100 से अधिक किस्में उगाई जाती हैं। मत्स्य पालन भी कृषि के बाद प्रमुख उत्पादन में से एक है। उत्पादित चावल के आकर्षक श्रेणियों में कोमल चावल, एक अनोखी किस्म है जिसे अनाज को 15 मिनट के लिए गर्म पानी में डुबो कर खाया जा सकता है और आमतौर पर नाश्ते को अनाज के रूप में खाया जा सकता है; बाओ धान, जो पानी के भीतर उगता है और दस महीने के बाद काटा जाता है; और बोरा चावल, एक चिपचिपा भूरा चावल जिसे पारंपरिक पिठा बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। मत्स्य पालन, दुग्धपालन, मिट्टी के बर्तन, हथकरघा और नाव बनाना अन्य महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधियाँ हैं।

हथकरघा गांवों की आबादी के बीच एक प्रमुख व्यवसाय है। हालांकि बड़े पैमाने पर एक गैर-व्यावसायिक व्यवसाय, यह कई निवासियों को अपने कब्जे में रखता है। कपास और रेशम, विशेष रूप से मुगा रेशम के विभिन्न रंगों और बनावट के उपयोग के साथ बुनाई उत्तम और जटिल है।

माजुली जोरहाट से 20 किमी दूर है। निमाती घाट के लिए बस या किराए की टैक्सी ले सकते हैं, जहां से फेरी सेवाएं चलती हैं। तीन बस की सवारी और दो नौका सवारी के साथ, दूरी को तय करने में तीन घंटे से अधिक समय लगता है।

(विभिन्न स्रोतों से सहायता लेकर प्रस्तुत किया गया)

हवा

श्री राज्य पाल देवकोटा
सहायक लेखा अधिकारी

घटती सांस, थमती प्रवाह,
लावा सा महसूस हो हवा,
झोंका राहत ना उमस दे,
दम घुटता सा लगे हवा।

पत्ते न हिले बस मुझीये,
ये कैसी चली हवा,
झूलस जाए तन इन थपेड़ों से,
बस थम जाए ये हवा।

यादें रह गई, उन झोकों की,
सहलाती सी तन को निर्मल,
सिहरन सी उठे स्पर्श से जिसके,
ठंडी बयार जिसे हम कहे।

कैसी है ये मौसम जो आई,
समझ से परे लगे हमें,
क्या ये ऋतु परिवर्तन है,
या नश्वर सच का आईना है।

मूस की मेहनताना

श्री स्वास्तिक बी. रसाईली
सुपुत्र-श्री राजेश कुमार रसाईली
स्थापना अधिकारी

एक समय की बात है। उस समय आदमी के पास धान नहीं हुआ करता था। सबसे पहले आदमी ने एक पोखरी में धान के पौधे को देखा। धान के पौधे को देखकर आदमी के मन में धान को प्राप्त करने की इच्छा हुई और मानो धान की बालियाँ भी हवा में झूम-झूमकर कह रही थी मुझे यहां से ले चलो। धान का पौधा गहरे पानी में था जहां तक पहुँच पाना अत्यंत कठिन था।

आदमी वहाँ से पौधे को निकालने के बारे में सोच ही रहा था तभी उसे अचानक एक मूस दिखाई पड़ा। आदमी ने मूस को पास बुलाया और कहा मूस भाई मुझे आपकी मदद चाहिए। वह धान की बालियाँ जो गहरे पानी में हैं। क्या तुम उसे निकाल सकते हो यदि तुम इसे मेरे लिए निकाल दे तो मैं तुम्हें तुम्हारी मजदूरी का हिस्सा दे दूंगा।

मूस ने हामी भर दी फिर क्या था मूस बड़ी ही फुरती से गहरे पानी में उतर कर धान की बालियों को कुतर कुतर कर किनारे ले आता है। कुछ ही देर में मूस ने बालियों का ढेर लगा दिया। आदमी बहुत खुश हुआ और मूस से कहा तुम अपनी मजदूरी ले लो। मूस ने जवाब दिया कि मैं बहुत छोटा सा जीव हूँ। मैं कहाँ अपने सिर पर धान की बालियों को लेकर जाऊंगा। मूस ने कहा आप ही पूरा धान लेकर जाईए और मैं आपके घर पर ही आकर अपने मजदूरी का थोड़ा- थोड़ा धान खा लिया करूंगा। आदमी ने मूस की बात मान ली और तभी से मूस और आदमी में दोस्ती हो गयी।



मेघालय के विभिन्न पर्यटन स्थल

डावकी

डावकी मेघालय के दक्षिण में एक सीमावर्ती शहर है स्नॉगपडेंग और दरांग के आस-पास प्रसिद्ध नदी तट के शिविरों का पता लगाने का मुख्य आधार है। यह उत्तरी बांग्लादेश के मैदानी इलाकों में पहाड़ियों के मिलन की बदलती स्थलाकृति एवं संस्कृतियों के मिलन की साक्षी है। जब आप कोमल, अंधेरी नदी के ऊपर आस पास मैदानों के ऊपर रोशनी को चमकते हुए देखते हैं तो यहां शाम का दृश्य शोभामान होता है।

स्नॉगपडेंग गाँव डावकी से 8 किमी उमंगोट के उत्तर में है। नदी का जल इतना साफ है कि आप उसके तल को झांक सकते हैं और पत्थरों को गिन सकते हैं - इसी तरह उमंगोट नदी का वर्णन पूर्व-मानसून, शरद ऋतु एवं सर्दियों के मौसम के दौरान किया जा सकता है। चाहे आप जंगलों से घिरे सौम्य नौका विहार का आनंद लेना चाहते हैं या आप स्कूबा गियर में नदी में डुबकी लगाना चाहते हैं, स्नॉगपडेंग की गतिविधियाँ आपको दिनभर व्यस्त रखेंगी।

स्नॉगपडेंग में कैपिंग, तैराकी और मछली पकड़ना जैसे कुछ मजेदार गतिविधियों का लाभ उठा सकते हैं। उमंगोट तक फैला पुल शानदार दृश्यों से भरा हुआ है और नदी के पास पिकनिक स्थल हैं। डावकी, स्नॉगपडेंग एवं उसके आसपास के क्षेत्रों में अनेक रिसार्ट और शिविर हैं।

क्रांगसुरी जलप्रपात

दक्षिणी मेघालय में क्रांगसुरी जलप्रपात एक अलग ही सौंदर्य प्रदान करता है। शांत नदी अचानक गिरती है, जिससे बहते जल का एक

पर्दानुमा आकृति बनकर गुफा के ऊपर गिरता है। ग्रीष्मकाल के दौरान, घने जंगलों के मध्य स्थित झरने के तल का जल नीला, साफ दिखाई देता है।

क्रांगसुरी जलप्रपात को देखने के लिए नीचे उतरना एक आनंददायक सफर है- आप खुले घास के मैदान पर शुरू करते हैं और फिर धीरे धीरे घनी झाड़ियों एवं वनस्पति में उतरते हैं। झरने के चारों ओर रेलिंग हैं, जहाँ से आप बेहदरीन दृश्य देख सकते हैं और आप वहाँ नौका विहार का आनंद ले सकते हैं। झरने के ऊपर एक छोटा सा स्थान है, जहाँ लोग शिविर लगा सकते हैं, जो हरी-भरी वनस्पतियों से घिरा हुआ है और नदी की कोमल लहरें आपका साथ निभायेगी। शांतिमय धूप में आप झरने के कुंड में डुबकी का आनंद ले सकते हैं। शिलांग से NH6 और NH206 के माध्यम से क्रांगसुरी के लिए 90-किमी की ड्राइव एक आकर्षक है - जो कोमल पहाड़ियों के चारों ओर घूमने वाला राजमार्ग, बस्तियों और छोटे शहरों से घिरा हुआ है।

नार्तियांग

मेघालय के जयंतिया जिले का एक अलग शाही इतिहास है और इस गौरवशाली अध्याय को देखने के लिए नार्तियांग सबसे उत्तम स्थानों में से एक है। मोनोलिथ के बगीचे में बड़े मोनोलिथ का संग्रह है जो पुराने राजाओं के स्मारकों के रूप में बनाए गए थे। इस विरासत स्थल से आपको शहर के अच्छे मनोरम दृश्य भी देखने को मिलेंगे। मोनोलिथ के संग्रह का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व है। खड़े मोनोलिथ या मेनहिर पुरुष पूर्वजों को समर्पित

नवीन पूर्वांचल संदेश

होते हैं जबकि समतल वाले, डोलमेन्स, महिलाओं को समर्पित होते हैं।

नार्तियांग इतिहास का बहुमूल्य खजाना है और यहां एक और प्रमुख स्थान दुर्गा मंदिर है, जो मोनोलिथ के पास है। हिंदू मान्यताओं के अनुसार नार्तियांग मंदिर 51 शक्तिपीठों में से एक है। मौजूदा मंदिर एक पुराने स्थान पर बनाया गया है और यहां लोहे के तोपों का भंडार है जो पुराने जयंतिया राजाओं द्वारा युद्धों में इस्तेमाल किया गया था। एक दिलचस्प तथ्य - नार्तियांग मंदिर पहले के दिनों में मानव बलि का स्थल था।

मावलिननॉन्ग गांव

मावलिननॉन्ग ने एशिया के सबसे स्वच्छ गांव की ख्याति अर्जित की है। फलों के बाग, बहती धाराएँ, सदाबहार परिवेश और खासी जनजाति द्वारा संरक्षित परंपराएँ मेघालय की दक्षिणी पर्वतमाला की एक परिपूर्ण गांव हैं।

संभवतः मेघालय का सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थल यहां पाया जाता है - नोंगबरेह लिविंग रूट ब्रिज। इस पुल का निर्माण फिक्स इलास्टिका पेड़ की जड़ों को एक ढांचे में चारों ओर बुनकर तैयार किया गया है और यह प्रक्रिया पीढ़ियों से की गयी थी। ये जीवित जड़ पुल खासी पारंपरिक वास्तुकला का एक प्रमुख हिस्सा हैं, ये घाटियों और पहाड़ों में बसे गांवों के लिए महत्वपूर्ण थे, जिससे लोगों को एक-दूसरे से जुड़ने एवं व्यापार करने के लिए तथा मैदानी इलाकों की यात्रा करने में मदद मिलती थी। ये आकर्षक पुल प्रकृति के सामंजस्य से बने हैं और जैसे-जैसे बड़े होते जाते हैं और मजबूत होते जाते हैं। पुल को मनोरम दृश्य के पश्चात,

आप नदी के तेज, ठंडे पानी में डुबकी भी लगा सकते हैं।

नोंगबरेह का जीवित रूट ब्रिज यहां का एकमात्र मुख्य आकर्षण नहीं है बल्कि मावलिननॉन्ग में चर्च ऑफ द एपिफेनी एक सदी से भी अधिक पुराना है, यूरोपीय वास्तुकला का एक सुंदर झलक इस हरे-भरे और हरे-भरे उष्णकटिबंधीय स्वर्ग के बीच में बसा हुआ है। गिरजाघर के पास ट्री हाउस का आनंद ले सकते हैं। इन बाँस की संरचनाओं से, आप बांग्लादेश के अंतहीन मैदानों को देख सकते हैं जो इसके ठीक आगे स्थित हैं।

उमियम झील

चारों तरफ पहाड़ियों और पुलों से घिरी, उमियम झील जो गुवाहाटी-शिलांग के मार्ग में सबसे सुंदर माना जाता है। झील का निर्माण तब हुआ था जब साठ के दशक की शुरुआत हुई। यह एक जल विद्युत परियोजना हेतु उमियम झील पर एक बांध का निर्माण किया गया था। उमियाम झील कई लोगों का पसंदीदा स्थान बन गया है।

उमियम झील जलक्रीड़ा तथा नौका विहार का आनंद लेने के लिए शिलांग का प्रमुख स्थान है। पैडल बोट, वॉटर स्कूटर और स्पीड बोट जैसे विकल्प लोगों के लिए भरपूर हैं। शांत झील के किनारे जंगल में कई अन्य रिसॉर्ट हैं, जहां आप शांत, प्राकृतिक परिवेश के बीच समय व्यतीत कर सकते हैं।

यदि आप प्राकृतिक सौंदर्य की तलाश में हैं, तो उमियम झील के पास ढेर सारे विकल्प हैं। यहाँ ऐसे कई दृश्य हैं जहां आप अपने आप पानी और पहाड़ियों पर खो सकते हैं, रहस्यमय

बादलों में डूब सकते हैं या मृदु धूप में स्नान कर सकते हैं।

नोहकालिकाई

भारत के मेघालय राज्य की दक्षिणी लकीरों पर स्थित 1000 फीट से अधिक ऊँचाई से गिरने वाली जलप्रपात में से, नोहकालिकाई का अपना उत्कृष्ट दर्जा है। यह चट्टानों की पृष्ठभूमि और नीचे गहरे पोखर और घने जंगलों से घिरी एक मंत्रमुग्ध कर देने वाला दृश्य प्रदान करती है। लाखों वर्षों से मेघालय के पहाड़ी इलाकों से निकली कई धाराओं से निर्मित, नोहकालिकाई का सांस्कृतिक रूप से बड़ा महत्व है - यह एक दुखद कहानी है जो आज भी लोकप्रचलित है।

लिकाई कहानी का नायिका है जो अनजाने में अपने ही बच्चे को पकाकर खा जाती है जो अपने ही दुष्ट सौतेले पिता ने अपने पागलपन और क्रोध में आकर अपने ही पुत्र की हत्या कर देते हैं। जब यह बात लिकाई को पता चलती है तब वह अपने गांव के पहाड़ से कूद गई। नोहकालिकाई का अर्थ- "जहां से लिकाई कूद गयी" है।

नोहकालिकाई का दृश्य करीब से और भी अधिक प्रभावशाली है। चट्टानों में एक बड़े दरवाजे की भांति घाटी के दृश्यों का आनंद ले सकते हैं। घने जंगलों के माध्यम से आप जलप्रपात के तल का आनंद ले सकते हैं। उच्च घास के मैदानों में घने जंगल के साथ कम ऊँचाई पर ही मृदुपवन का आनंद घंटों तक प्राप्त कर सकते हैं।

मावस्माई गुफा

मेघालय के मावस्माई गुफा सोहरा से थोड़ी दूरी पर स्थित है जो प्रकृति का सुंदर स्वरूप है। गुफा अपने जीवाश्मों के लिए भी प्रसिद्ध है, जो आप दीवारों तथा उनकी संरचनाओं को देख सकते हैं। गुफा के अंदर का कुछ ऐसे स्थान हैं, जहाँ आप चारों ओर चट्टानों से पूरी तरह घिर जाते हैं और जिसमें से रेंगने की आवश्यकता होगी। मावस्माई गुफा का मार्ग जो पर्यटकों के लिए बहुत सुरक्षित एवं सुलभ है। देश की दस सबसे लंबी गुफाएं सभी मेघालय में हैं। मावस्माई हमारे कदमों के नीचे इस आकर्षक दुनिया में एक झलक पेश करता है।

मौसिनराम

मेघालय के सुप्रसिद्ध स्थल मौसिनराम का पूरे विश्व में पर्याप्त वर्षा का अभिलेख दर्ज है, लेकिन यहाँ और भी कई अनोखे स्थल हैं। क्रेमपुरी दुनिया की सबसे लंबी बलुआ पत्थर की गुफा है। जिसमें प्रवेश करने के लिए घाटी के ढलानों तल तक जाना होता है।

वन्यजीव फलंगवानब्रोई गांव हैं जो हूलाँक गिबबन की संरक्षित आबादी के लिए जाना जाता है।

मौसिनराम में घूमने के लिए सबसे अच्छा स्थान मावलिंगबना है, जो सुंदर उमखाकोई झील के लिए जाना जाता है। मेघालय के इस मनोरम क्षेत्र में समय बिताने के यात्रियों के लिए फलांग मावसिरपत गांव में वेइंग लेकसाइड कैम्प एक पसंदीदा स्थान है। स्प्लिट रॉक विशिष्ट आकर्षणों में से एक है- जहां विशाल चट्टान दो भागों में विभाजित है, इस

नवीन पूर्वांचल संदेश

घटना को 1897 में हुये असम भूकंप के विनाशकारी परिमाण है। मौसिनराम के मार्ग में, प्रसिद्ध लुम सिम्पर पहाड़ी और मावजिम्बुइन गुफाएं लोकप्रिय स्थल हैं।

नॉग्रियट डबल-डेकर रूट ब्रिज

मेघालय के नॉग्रियट डबल-डेकर रूट ब्रिज रहस्यमय ब्रिज हैं, जो पुरानी खासी जीवन शैली का एक अभिन्न अंग है, नॉग्रियट का डबल-डेकर रूट ब्रिज अपने बहु-स्तरीय गठन के कारण अद्वितीय है - वनस्पति वास्तुकला के इन सुंदर उदाहरणों को विकसित होने में वर्षों समय लग गए। यह तिरना गाँव के पास घाटी के सिरे से शुरू होती हैं जिसमें लगभग 3000 सीढ़ियाँ हैं। रास्ते में, बहुत सारे मनमोहक नज़ारे देखने को मिलते हैं।

डबल डेकर ब्रिज के अतिरिक्त, एक छोटा लेकिन तीव्र ट्रेक रेनबो फॉल्स की ओर जाता है, जो अपने फ़िरोज़ा ब्रिज और विशाल पत्थरों के लिए जाना जाता है।

वारीचोरा

वारीचोरा मेघालय गारो पहाड़ियों में स्थित एक छोटा सा गाँव है। वारीचोरा की वारी का अर्थ है एक गहरी नदी। वारी चोरा मेघालय के दक्षिण गारो पहाड़ियों में स्थित है।

नदी में रिवर राफ्टिंग सबसे अच्छी चीजों में से एक है जिसे आप कभी भी अनुभव कर सकते हैं। नदी का जल नीले रंग का है जो अत्यधिक मनमोहक हैं। यहाँ विभिन्न गुफाएँ मौजूद हैं फिर भी झरने के जल का कलरव सुनाई देता है। वारी चोरा की अत्यंत शांति पर्यटक का हृदय प्रफुल्लित कर देती है।

रे-नांग डेयर फॉल्स और चिबोक डेयर, बावे दुर्गा नाम के झरने हैं। इन झरनों तक पहुँचने का रास्ता बहुत कठिन है, ये भव्य क्रिस्टल-क्लियर फॉल्स हैं, जो आपकी आँखों को ठंडक प्रदान करने का काम करता हैं। मेघालय में वारी चोरा आपके शहर में चिलचिलाती गर्मी से बचने के लिए आदर्श सर्वोत्कृष्ट गंतव्य है।

एलीफेंट फॉल्स

शिलांग के पास एक लोकप्रिय पर्यटक आकर्षण, एलीफेंट फॉल्स 3 नदियों का एक संयोजन है। ब्रिटिश अधिकारियों में से एक ने हाथी की तरह दिखने वाली चट्टान को देखने के बाद इसका नाम एलीफेंट फॉल्स रखा। यह चट्टान बाद में भूकंप के कारण नष्ट हो गई थी। का क्षैद लाई पाटेंग खोहसीव खासी जनजाति द्वारा दिया गया नाम था, जिसका अर्थ है तीन कदमों वाली जलप्रपात। मेघालय की राजधानी से लगभग 12 किमी दूर एलीफेंट फॉल्स है।

सिजू गुफा

सिजू गुफा का दर्शन करना पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश करने जैसा है, जो अद्वितीय दृश्यों और संरचनाओं का स्थान है। जहाँ आप बहते हुए पहाड़ी जलधाराओं पर कदम रखते हैं। घुमावदार मार्ग का निर्माण किया गया है जो आपको घने वनस्पतियों में छिपे चट्टानों के निर्माण के क्षेत्र में ले जाता है। फिर आप सिजू गुफा के भव्य और ऊँचे धनुषाकार प्रवेश द्वार पर पहुँचते हैं। जैसे-जैसे आप अंदर गहराई में प्रवेश करते हैं, बाहरी दुनिया की रोशनी हल्की होने लगती है। यह चमगादड़ों का घर हैं - इसे सिजू बैट गुफा भी कहते हैं। गुफा में तालाब और झरने हैं।

यह दुनिया की सबसे लंबी गुफाओं में से एक है। यह केवल पौराणिक गुफा ही नहीं है, जो सिजू को बहुत मोहक बनाती हैं, बल्कि सिजू पक्षी अभयारण्य प्रकृति प्रेमियों के लिए एक

बेहतरीन स्थान है। यह जंगल साइबेरियन बतख और हॉर्नबिल और दुर्लभ मोर तीतर जैसे कई प्रवासी प्रजातियों का घर हैं। सिमसांग नदी गारो हिल्स क्षेत्र का अदम्य अनुभव प्रदान करेंगी।

राजनीतिक वादे



श्रीमती वीणा कुमारी राय
मोतीनगर

कुछ वर्ष पहले एक राजनैतिक पार्टी द्वारा कई वादे किये गये थे जो कि जमीनी स्तर पर आज तक वादे ही रह गये और हमारे देश की भोली भाली जनता आज तक टकटकी लगाये बैठे हैं। अपनी उम्मीद संजोए इसी आश में कि साहेब अपनी उन वादों को याद कर इस की ओर अपनी कदम बढ़ायेंगे और लोगों को रोजगार और अच्छी सेवायें मुहैया करायेगे पर साहब का तो ढंग और अंदाज देखकर यही लगता है कि हमलोग पूरी तरह ठगे गये हैं और हमारी जो स्थिति है उनमें उनका कोई दिलचस्पी नहीं है। बस अपने परममित्रों के अनुरूप कार्य करते हुए विवश नागरिकों को अपने हाल पर छोड़ देती है, लगातार रोजगार कम हो रहे हैं, रुपये गिरते जा रहे हैं। तमाम वादे ही रह जाएंगे। ऐसा प्रतीत हो रहा है हमारे किर्कव्यमूढ़ साहेब समाजिक सौहार्द्र को दो भागों में बाँट कर अपनी गुणगान सुन अपनी स्थिति सुदृढ़ करते हुए नागरिकों के मूलभूत अधिकारों का हनन करते रहेंगे।

यह तो हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए कि हम अपने क्षेत्र में किस सच्चे इंसान का साथ दे जो आगे चलकर हमारी और हमारे देश के नागरिकों का ध्यान रखें और समाजिक सौहार्द्र बनाये रखें।



वन

जयश्री

कानन अथवा वन इस पारिस्थितिकी तंत्र का एक महत्वपूर्ण अंग है। पेड़ों को भी भोजन बनाने की आवश्यकता होती है जो वे सूर्य की प्रकाश के सहारे तैयार करते हैं। वन संश्लेषण के द्वारा वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड निकालते हैं और हवा में ऑक्सीजन छोड़ते हैं। जंगल में पेड़ों का घनत्व एक पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य का सूचक है। यह सभी जीवित प्रणियों के लिए भोजन, आश्रय और ऊर्जा के स्रोत के रूप में भी काम कर सकता है। जंगल, इसमें रहने वाले पौधों और जानवरों के लिए जीवन का एक स्रोत है और जल स्रोतों को प्रदूषण से बचाने में मदद करते हैं। जानवर, कीड़े, सरीसृप, पक्षी, उभयचर और कई अन्य जीव जंगल में अपना घर बसाते हैं। वन हमें ऑक्सीजन प्रदान करता है और हमारी हवा को साफ करता है। साथ ही वन में पाए जाने वाली पेड़ों से विभिन्न प्रकार के औषधियों को प्राप्त किया जाता है।

स्वस्थ ग्रह के लिए वनों का होना आवश्यक है। वन हमारे समाज के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे कई आवश्यक संसाधन प्रदान करते हैं। वन अर्थव्यवस्था के लिए उपयुक्त हैं क्योंकि पेड़ों को काटा जा सकता है और कागज, लकड़ी और अन्य उत्पादों में बदल दिया जा सकता है। वन की भूमि जानवरों और पौधों और सूक्ष्मजीवों की कई प्रजातियों के लिए आवश्यक आवास भी प्रदान करती है। वनों का पर्यावरण पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। वे जानवरों, पौधों और मनुष्यों के लिए ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। वे हवा और पानी को फिल्टर करते हैं और मौसम और जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करते हैं। वन लुप्तप्राय प्रजातियों सहित वन्यजीवों के लिए आवास भी प्रदान करते हैं।

कुछ लोगों को वनों के संरक्षण के महत्व का एहसास नहीं हो सकता है। वन पक्षियों, स्तनधारियों और कीड़ों के लिए आवास प्रदान करते हैं। वे बाढ़ को रोकने में भी मदद करते हैं तथा वे बारिश के तूफान से अतिरिक्त पानी को अवशोषित करते हैं और जमीन पर मिट्टी को हिलाने से होने वाले क्षरण को रोकते हैं। वन क्षेत्रों में कमी के साथ, पौधे मरने लगते हैं। इससे जानवरों की आबादी में कमी आती है क्योंकि कई जानवर भोजन और आश्रय के लिए पौधों के जीवन पर निर्भर होते हैं। यदि दुनिया के जंगलों का एक बहुत अधिक महत्वपूर्ण हिस्सा नष्ट हो जाता है, तो हमारे ग्रह के लिए इसके अपरिवर्तनीय परिणाम हो सकते हैं। आज हम वनों के पेड़ काटकर विभिन्न प्रकार के फर्नीचर, व्यवसाय स्थान यथा मॉल, आदि का निर्माण कर रहे हैं।

वन स्वच्छ हवा प्रदान करता है और जलवायु को साफ रखता है। पेड़ जैव विविधता के लिए और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। अतः यह सबका कर्तव्य है कि हम वनों को काटने से बचाए, अधिक से अधिक पौधे लगाएं जिससे हमारी आने वाली पीढ़ी को भी स्वस्थ जीवन प्रदान हो।

सफलता

सुरेन्द्र कुमार
स्टेनोग्राफर

बिहार, एक ऐसा प्रदेश जहां कई युवा अपना भविष्य बनाने के लिए तैयारी करते हैं ताकि उनका परिवार और आने वाली पीढ़ी सुख से जीवन यापन कर सके। पटना, बिहार का वो शहर है जो सबसे ज्यादा तैयारी का जगह माना जाता है। और कई सारे युवा इसी शहर में तैयारी करते हैं और कई सारी सरकारी नौकरियों में जाते हैं— जैसे कि रेलवे, एसएससी, सिविल सेवा आदि।

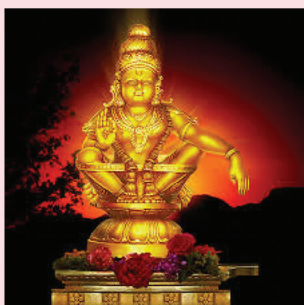
ऐसी ही एक कहानी है एक युवा लड़के की जिसका नाम है रवि जो बक्सर का रहने वाला है। सभी की तरह इसका भी एक सपना है कि वह भी तैयारी करके कोई अच्छी सी नौकरी प्राप्त कर ले। रवि परिवार में सबसे छोटा लड़का है। दो बड़े भाई हैं और मां है। पिता जी का देहांत पहले ही हो गया था जिसकी वजह से परिवार की जिम्मेदारी बड़े भाईयों पर आ गई। रवि एक मध्यम वर्ग परिवार से है।

बारहवीं की पढ़ाई पूरी करके रवि तैयारी करने के लिए पटना चला जाता है। वहां एक किराये का कमरा लेता है और एसएससी की तैयारी शुरू कर देता है। वह एक अच्छी कोचिंग भी ज्वाइन कर लेता है। तैयारी के जुनून में वह कभी भी खाना बनाने में ज्यादा मेहनत नहीं करता है। कभी खिचड़ी तो कभी दाल-चावल। कभी दो टाइम खाता था तो कभी एक टाइम। वह सारी चीजों को त्यागकर बस अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहा। लगातार 2 साल कड़ी मेहनत करने के बाद वह परीक्षा देता है और सफल हो जाता है। उसकी पहली नियुक्ति गुवाहाटी, असम में होती है और वह बहुत खुश हो जाता है। साथ ही साथ परिवार वाले भी बहुत खुश होते हैं।

कुछ सालों तक नौकरी करने के बाद वह रियल स्टेट में भी इन्वेस्टमेंट करने लगता है और धीरे-धीरे वह इसमें भी सफल होने लगता है और अच्छा मुनाफा कमाने लगता है। जब उसका यह व्यापार अच्छा चलने लगता है तो वह नौकरी छोड़ने के बारे में सोचने लगता है। वह सोचने लगता है कि सरकारी नौकरी में वह बंधा हुआ महसूस करता है और व्यापार में वह लगातार आगे बढ़ सकता है। पहले तो वह यह सोचता है कि अगर व्यापार में घाटा हुआ या व्यापार सफल नहीं हुआ तो वह क्या करेगा। सरकारी नौकरी की तो यह गारंटी है कि उसे किसी भी समय घाटा नहीं होगा। काफी जद्दोजहद के बाद वह इस नतीजे पर पहुंचता है कि उसे नौकरी छोड़नी है और अपने व्यापार को पूरा समय देकर उसे आगे तक ले जाना है। अंततः वह नौकरी छोड़ देता है और वापस अपने घर जाकर अपना पूरा समय अपने व्यापार को देता है और देखते ही देखते वह काफी तरक्की कर लेता है। और तब उसे इस बात से सुकून मिलता है कि उसने नौकरी छोड़ के कोई गलती नहीं की। आज वह और उसका परिवार काफी खुश है।

इस कहानी से हमें यह सीखने को मिलता है कभी भी जीवन में किसी काम से डरना नहीं चाहिए और हमेशा आगे बढ़ने के बारे में सोचना चाहिए क्योंकि बिना परिश्रम और बिना रिस्क उठाए कोई भी आगे नहीं बढ़ सकता है।





भगवान श्री अय्यप्पन

सबरिमला

राजलक्ष्मी

इंसान का एक वर्ग धर्म/भगवान को एक विकृति के रूप में देखते हैं जबकि दूसरे वर्ग के लिए भगवान लोकप्रिय धारणा के सदस्य हैं, जो सभी जीवों को समान मानते हैं। सबरिमला मंदिर भारत के केरल राज्य के पतनमतिट्टा ज़िले में पेरियार टाइगर अभयारण्य के भीतर सबरिमलय पहाड़ पर स्थित एक महत्वपूर्ण प्राचीन मंदिर है। यह विश्व के सबसे बड़े तीर्थस्थलों में से एक है, और यहाँ प्रतिवर्ष चार से पांच करोड़ श्रद्धालु आते हैं। यह मंदिर भगवान अय्यप्पन को समर्पित है। मलयालम में 'शबरीमाला' का अर्थ होता है, पर्वत। शबरी पर्वत पर घने वन हैं। इस मंदिर में आने के पहले भक्तों को 41 दिनों का कठिन व्रत का अनुष्ठान करना पड़ता है जिसे 41 दिन का 'मण्डलम्' कहते हैं। जिस तरह यह अठरह पहाड़ियों के बीच स्थित है, उसी तरह मंदिर के प्रांगण में पहुंचने के लिए भी अठरह सीढ़ियां पार करनी पड़ती हैं। मंदिर में अय्यप्पन के अलावा मालिकापुरत्त अम्मा, गणेश और नागराजा जैसे उप देवताओं की भी मूर्तियां हैं। उत्सव के दौरान भगवान अय्यप्पन का घी से अभिषेक किया जाता है। मंदिर के परिसर के एक कोने में सजे-धजे हाथी खड़े होते हैं। यहां ज्यादातर पुरुष भक्त देखे जाते हैं। महिला श्रद्धालु बहुत कम होती हैं। अगर होतीं भी हैं तो बूढ़ी औरतें और छोटी कन्याएँ। इसका कारण यह है की श्री अय्यप्पन ब्रह्माचारी थे। इसलिए यहां पर छोटी कन्याएँ आ सकती हैं, जो रजस्वला न हुई हों या बूढ़ी औरतें, जो इससे मुक्त हो चुकी हैं।

सर्वोच्च न्यायालय ने केरल के सबरिमला मंदिर में महिलाओं के प्रवेश के मुद्दे पर ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए हर उम्र की महिला को मंदिर में प्रवेश करने की अनुमति दे दी है। 4:1 के बहुमत से हुए फैसले में पाँच जजों की संविधान पीठ ने स्पष्ट किया है कि हर उम्र की महिलाएँ अब मंदिर में प्रवेश कर सकेंगी। केरल के सबरिमाला मंदिर से जुड़ी अनुष्ठान प्रथाओं में हजारों पुरुष काले कपड़े पहनते हैं जो ब्रह्मचर्य और निरंतरता के अभ्यास का पालन करते हैं। पहाड़ी के ऊपर अय्यप्पन देवता- दोनों भगवान, शिव (हरि) और विष्णु (हरि) के पुत्र हैं इसलिए उन्हें हरिहर सुत के रूप में भी जाना जाता है। भले ही विष्णु ने मोहिनी के रूप में एक महिला का रूप धारण किया, वह गर्भ (योनी) के माध्यम से सामान्य तरीके से पैदा नहीं हुआ था, यही कारण है कि उसे अयोनीजा कहा जाता है, जो गैर भौतिकता का एक सामान्य सूचक भी है।

सबरिमला का मंदिर विभिन्न धर्मों- आदिवासी, लोक, वैष्णव, शैव, वेदांत, तंत्र और यहां तक कि इस्लाम को एक साथ लाने का एक प्रयास था। यही कारण है कि मंदिर परिसर में मुस्लिम वावर (एक ऐसी आकृति है जो हिंदू मान्यता में भगवान अय्यप्पा से संबंधित है) का एक मंदिर शामिल है (जिसे काली मिर्च अर्पित की जाती है, जो कभी अरब व्यापारियों के साथ व्यापार करता था)। कई हिंदू मंदिरों की तरह सबरिमला एक ऐसा मंदिर है, जो समृद्ध ऐतिहासिक, मानवशास्त्रीय और समाजशास्त्रीय जानकारी से भरपूर है। जब हम शारीरिक या मनोवैज्ञानिक रूप से इन मंदिरों के दर्शन करते हैं, तो हम इस बात पर ध्यान दे सकते हैं कि वहां क्या गलत है या क्या सही है। जो लोग केवल धर्म में गलत देखते हैं, वे आज आलोचकों और सुधारकों के रूप में मान्य हैं। जो लोग केवल धर्म में अच्छाई देखते हैं उन्हें परंपरावादी और माफी देने वाले के रूप में देखा जाता है। दोनों हमेशा मौजूद रहेंगे। साथ में वे संस्कृति के बल और प्रतिरूप का निर्माण करते हैं।

हिन्दी : राजभाषा या राष्ट्रभाषा

लेखक- श्री अशोक कुमार,
वरि.अनुवादक

ऐसा कहा जाता है कि मानव अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए जिस माध्यम का प्रयोग करता है, उसे भाषा कहा जाता है। मातृभाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम और संस्कृति की सजीव संवाहक होती है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा हर साल 21 फरवरी का दिन दुनिया भर में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाया जाता है। लेकिन जो सम्पूर्ण राष्ट्र को जोड़ सके, वह होती है राष्ट्रभाषा। राष्ट्रभाषा विभिन्न देशों की अलग-अलग होती है जैसे-चीन में चाइनीज, इंग्लैण्ड में अंग्रेजी, भारत में हिन्दी, पाकिस्तान में उर्दू, अमेरिका में अंग्रेजी, जापान में जापानी इत्यादि। भाषा देश की पहचान है। जब कोई व्यक्ति किसी अन्य प्रान्त या देश में जाता है तो उस प्रान्त या देश में उसकी पहचान उसकी भाषा से की जाती है एवं उस व्यक्ति से उस प्रान्त या देश की भाषा में ही वार्तालाप किए जाने की अपेक्षा की जाती है। कोई भी व्यक्ति निज भाषा अर्थात् मातृभाषा में ही अपनी मूल भावनाओं एवं विचारों को व्यक्त कर सकता है। जैसा कि सुमित्रानंदन पंत ने लिखा है-

“हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है”

हिन्दी साहित्य के महान लेखक/रचनाकार/नाटककार भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने कहा है-

“निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।

बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।

सब देसन से लै करहू, भाषा महि प्रचार।।”

आज भी जब कि हम स्वतंत्र देश में रहते हैं तो भी हम देशीय भाषा के स्थान पर विदेशी भाषा को स्वीकृति दिए हुए एक ऐसे राष्ट्र के रूप में उभरे हैं, जो अब भी औपनिवेशिक मानसिकता, मानसिक गुलामी से मुक्ति नहीं प्राप्त कर सका है। निज भाषा के साथ-साथ अन्य भाषाओं को सीखना गुणी और बुद्धिमान होने का प्रतीक है परन्तु निज भाषा को छोड़कर विदेशी भाषा को अंगीकार कर स्वयं को मानसिक गुलामी से जकड़न पैदा करना है। अपने देश की पहचान अपनी संस्कृति, अपने पहनावे, अपनी भाषा, अपने खान-पान, अपने चाल-ढाल, अपने आचरण से होती है। 21 फरवरी इसकी याद दिलाता है कि इस प्रकार की जड़ता से, इस प्रकार की मानसिक गुलामी से हमें हर हालत में मुक्ति होना चाहिए।

वाल्टर चेनिंग ने लिखा है-

“विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है।”

नवीन पूर्वाचल संदेश

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने तो लिखा है कि “राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है”।

भारत के कुछ हिस्सों में कहीं कहीं पर यह देखनों को मिलता है कि जब शिक्षित लोग क्रोध या आवेश में होते हैं तो अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करते हैं और शांत मन से अपनी भावनाएं व्यक्त करते हैं तो निज भाषा अर्थात् हिंदी का प्रयोग करते हैं। हिन्दी भाषा भारतीय संस्कृति का प्राण है जो पूरे देश को एक सूत्र में जोड़े रखती है। वहीं देश की अन्य प्रांतीय भाषाओं का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये भाषाएं सुंदर पुष्प के समान हैं। जो हिन्दी भाषा इन सबको पिरोकर सुंदर माला का निर्माण करती है और यह हमारे भारत का श्रृंगार और आभूषण की भांति है। कमलापति त्रिपाठी ने लिखा है-

“हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है”।

हिन्दी को संविधान में भारत की राजभाषा के रूप में 14 सितम्बर 1949 को स्वीकार किया गया था। अतः इसका विरोध करना संविधान में लिखित नियमों का उल्लंघन करना है। अपने देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने लिखा है-

“जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता”।

प्रान्तीय या राज्य स्तर पर जो क्षेत्रीयता लोगों में व्याप्त है और भाषा के प्रति जो ईर्ष्या-द्वेष व्याप्त है, उसे दूर करने हेतु हिन्दी का प्रचार प्रसार अधिक करना होगा। जैसा कि स्वतंत्रता सेनानी सुभाष चंद्र बोस ने कहा है-

“प्रांतीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी अन्य किसी चीज से संभव नहीं।”

जब कोई भारतीय व्यक्ति किसी दूसरे देश में जाता है और वहां कोई अपने देश का निवासी मिल जाता है तो हम उससे अपनी भाषा अर्थात् हिंदी में बातचीत करना अधिक पसंद करते हैं क्योंकि यह आम बोलचाल की भाषा है। जैसा कि जार्ज ग्रियर्सन ने लिखा है-

“हिंदी आम बोल-चाल की महाभाषा है।”

संक्षेप में यह प्रस्तुत करता हूँ कि हिंदी हमारे देश की राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा दोनों है। यह भाषा उत्तर से दक्षिण तक तथा पूर्व से पश्चिम तक सम्पूर्ण भारत देश को एक सूत्र में पिरोती है। हमें हिंदी भाषा का प्रयोग अधिक से अधिक करना चाहिए ताकि दुनिया के मानचित्र में अपने देश को सर्वोपरि रखने में मदद मिल सके और हम सब भारतीय गौरवान्वित महसूस कर सकें एवं अपनी पहचान बना सकें। जय हिन्दी जय भारत।



हिंदी दिवस

भागीरथ प्रसाद
आंकड़ा प्रविष्ठक

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर
भाव सुनाने आया हूं।

पल-पल, पल-पल लोप हुई यह,
गलती बतलाने आया हूं।

पिता की डांट से मां की लोरियों तक,
स्कूली किताब से यारों की टोलियों तक
जिनसे मैंने जो कुछ भी पाया है
हिंदी ने तो अपना किरदार निभाया है।

जब भी होता हूं मैं भावुक
जुबान लड़खड़ाती है
ऐसे समय में मेरे दोस्त
बस हिंदी ही काम आती है।

बदलेंगे हालात हमारे
हिंद भी मुस्कुराएगी
जन-जन की भाषा हिंदी जब
दिल से अपनाई जाएगी।

सम्मान जो खोया है इसने
उसको वापस लौटाना है
अस्तित्व न खो दे अपना ये
हिंदी को हमें बचाना है।

बिन इसके अधूरी हैं सब
सबकी हालात ही ऐसी हैं
हिंदी बिन जीवन कैसा दोस्तों
हिंदी तो मां जैसी है।



सुश्री तनुश्री दे, सुपुत्री- श्री पार्थ ज्योति दे,
सहायक लेखा अधिकारी द्वारा चित्रकारी।



श्री प्रत्युस साह, सुपुत्र श्री दीननाथ साह,
लिपिक/ टंकक द्वारा चित्रकारी।



सुश्री रिद्धिका देवकोटा, सुपुत्री- श्री राज्यपाल देवकोटा,
सहायक लेखा अधिकारी द्वारा चित्रकारी।

नवीन पूर्वाचल संदेश



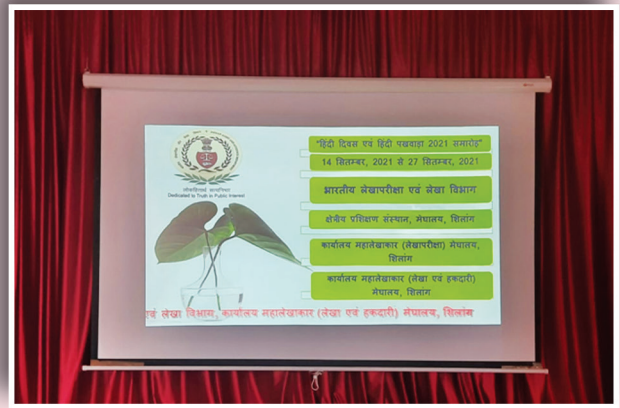
“हिन्दी पखवाड़ा 2021” के उद्घाटन समारोह के पावन अवसर पर आदरणीय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) श्री फ्रेडरिक सिम्लेह महोदय के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन की एक झलक।



“हिन्दी पखवाड़ा 2021” के पावन अवसर पर आदरणीय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) श्री फ्रेडरिक सिम्लेह महोदय के करकमलों द्वारा वार्षिक ई-पत्रिका “नवीन पूर्वाचल संदेश” के 16 वें संस्करण के विमोचन की एक झलक।



“हिन्दी पखवाड़ा 2021” के पावन अवसर पर वार्षिक ई-पत्रिका “नवीन पूर्वाचल संदेश” के 16वें संस्करण के विमोचन की एक झलक।



“हिन्दी पखवाड़ा 2021” शिलांग स्थित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के तीनों कार्यालयों द्वारा संयुक्त रूप से मनाया गया।



“हिन्दी दिवस 2021” के पावन अवसर पर “राजभाषा प्रतिज्ञा” पत्र का वाचन करते हुए अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण की एक झलक।



“हिन्दी पखवाड़ा 2021” के उद्घाटन समारोह में उपस्थित आदरणीय अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण।

नवीन पूर्वाचल संदेश



“हिन्दी पखवाड़ा 2021” के पावन अवसर पर आदरणीय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) महोदय “नवीन पूर्वाचल संदेश” के 16वें अंक में सर्वश्रेष्ठ लेखन हेतु लेखिका को पुरस्कृत करते हुए



“हिन्दी पखवाड़ा 2021” के पावन अवसर पर आदरणीय वरिष्ठ लेखा अधिकारी श्री आनन्द कौशल महोदय, सभागार में उपस्थित समस्त अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण को धन्यवाद ज्ञापन से अभिभूत करते हुए ।



“हिन्दी दिवस 2021” के पावन अवसर पर “राष्ट्रगान” प्रस्तुत करते हुए आदरणीय अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण की एक झलक।



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग में कार्यरत राजभाषा संवर्ग के श्रीमती राजलक्ष्मी गांगुली, कनिष्ठ अनुवादक, “हिन्दी पखवाड़ा 2021” के पावन अवसर पर कार्यक्रम-उद्घोषक की भूमिका में।



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग में कार्यरत राजभाषा संवर्ग के श्री पुरुषोत्तम गिरि, कनिष्ठ अनुवादक, हिंदी दिवस 2021 समारोह के पावन अवसर पर कार्यक्रम-उद्घोषक की भूमिका में।



“हिन्दी पखवाड़ा 2021” के समापन समारोह के पावन अवसर पर आशुभाषण प्रस्तुत करती हुई प्रतिभागी।

नवीन पूर्वाचल संदेश



“हिन्दी पखवाड़ा 2021” के समापन समारोह के पावन अवसर पर आदरणीय वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) श्री वेंजामिन करुणाकरण महोदय के करकमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन की एक झलक।



“हिन्दी पखवाड़ा 2022” के पावन अवसर पर आदरणीय स्थापना अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) श्री राजेश रसाईली महोदय द्वारा विजयी प्रतिभागी को पुरस्कृत करते हुए एक झलक।



“हिन्दी पखवाड़ा 2021” के पावन अवसर पर आदरणीय वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) महोदय द्वारा विजयी प्रतिभागी को पुरस्कृत करते हुए।



“हिन्दी पखवाड़ा 2021” के पावन अवसर पर शिलांग स्थित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग में कार्यरत राजभाषा संवर्ग।

नवीन पूर्वाचल संदेश



“हिन्दी पखवाड़ा 2021” के पावन अवसर पर आदरणीय वरिष्ठ लेखा अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) श्री सवेरियुस नांबाह महोदय द्वारा विजयी प्रतिभागी को पुरस्कृत करते हुए।



“हिन्दी पखवाड़ा 2021” समापन समारोह के सुअवसर पर सभागार में उपस्थित सभी आदरणीय अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण द्वारा राष्ट्रगान की प्रस्तुति की एक झलक।



“हिन्दी पखवाड़ा 2021” समारोह के सुअवसर पर अंताक्षरी प्रतियोगिता की एक झलक।



“हिन्दी पखवाड़ा 2021” समारोह के सुअवसर पर अनुवाद प्रतियोगिता की एक झलक।



“हिन्दी पखवाड़ा 2021” समारोह के सुअवसर पर निबंध प्रतियोगिता की एक झलक।



हिन्दी पखवाड़ा 2021” समारोह के सुअवसर पर श्रुतलेख प्रतियोगिता की एक झलक।

नवीन पूर्वाचल संदेश



हिन्दी कार्यशाला के दौरान उपस्थित आदरणीय अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण।



“लेखापरीक्षा सप्ताह 2021” के सुअवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागीगण एवं आयोजक समिति के सदस्यगण ।



स्वतंत्रता दिवस 2022 के पावन अवसर पर उपस्थित अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण।



स्वतंत्रता दिवस 2022 के पावन अवसर पर “राष्ट्रीय ध्वजारोहण” करते हुए आदरणीय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) महोदय



गणतंत्र दिवस 2022 के पावन अवसर पर “राष्ट्रीय ध्वजारोहण” करते हुए आदरणीय महानिदेशक, क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान महोदय

नवीन पूर्वांचल संदेश



स्वतंत्रता दिवस 2022 के पावन अवसर पर सार्वजनिक भवन, लेखापरीक्षा एवं लेखा इस्टेट, मोतीनगर में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए बालक बालिकाएँ ।



स्वतंत्रता दिवस 2022 के पावन अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज हाथ में थामे हुए बालिका की मनमोहक झलक।



स्वतंत्रता दिवस 2022 के पावन अवसर पर सार्वजनिक भवन, लेखापरीक्षा एवं लेखा इस्टेट, मोतीनगर में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनन्द से आलोकित होते हुए दर्शकगण।

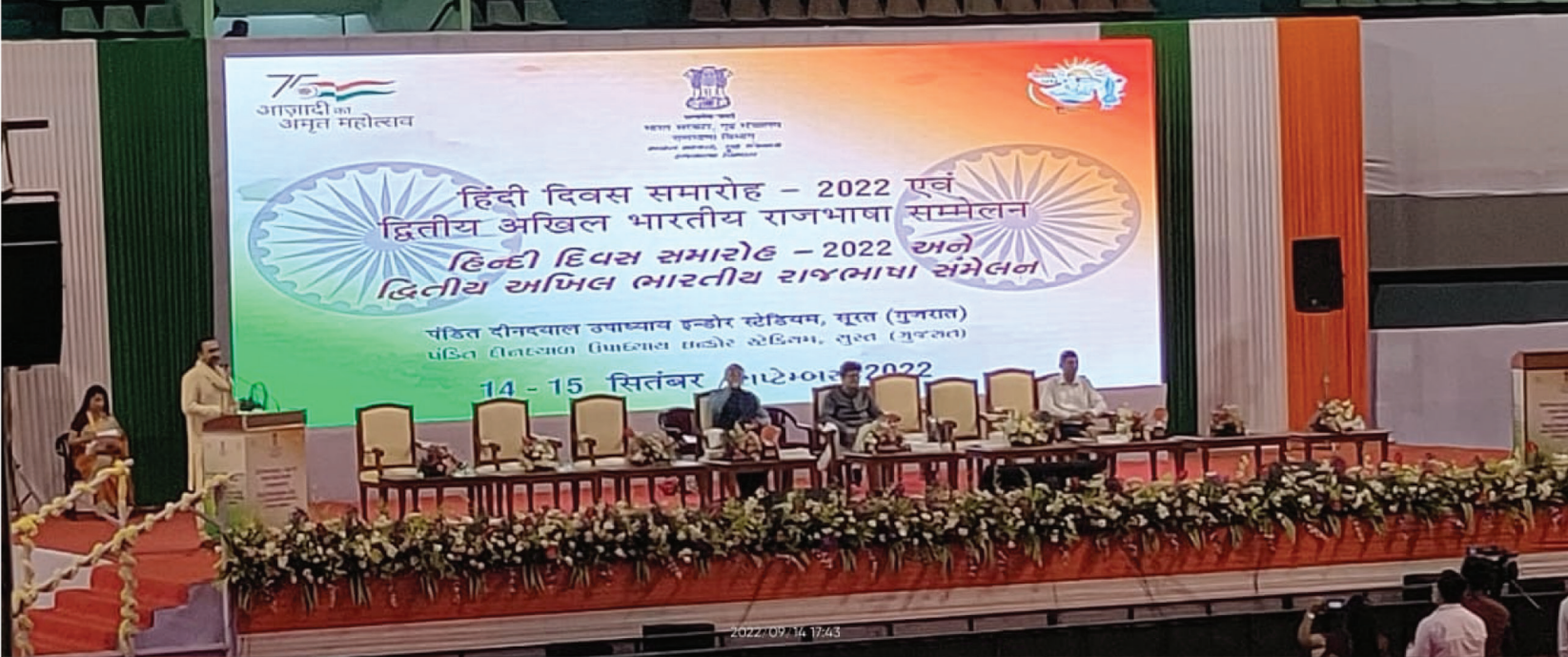
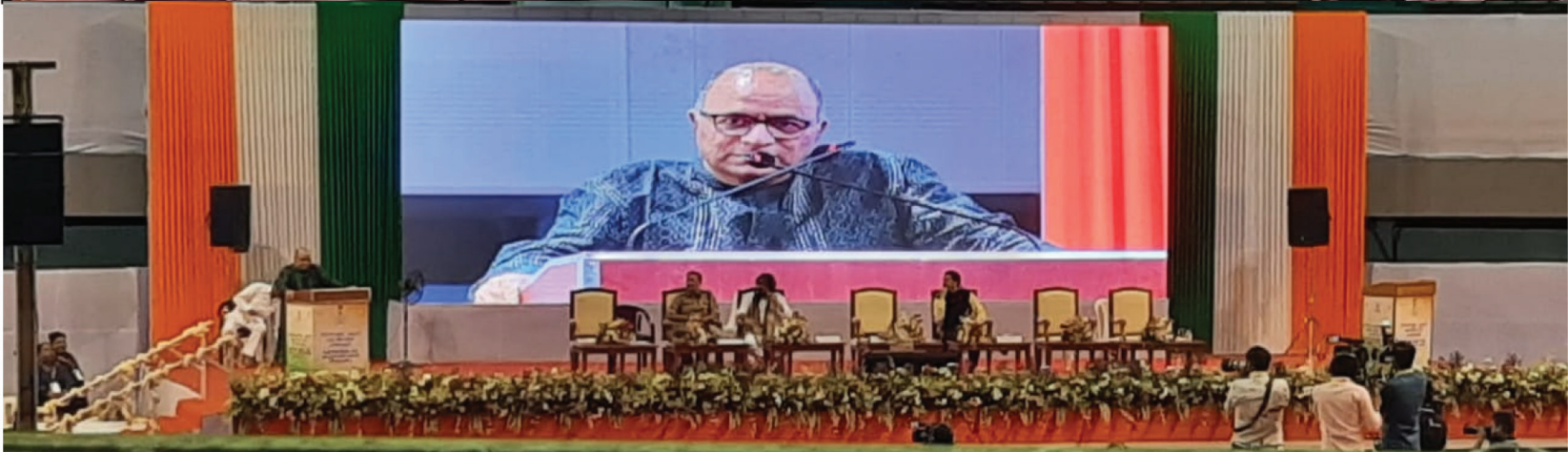


स्वतंत्रता दिवस 2022 के पावन अवसर पर सार्वजनिक भवन, लेखापरीक्षा एवं लेखा इस्टेट, मोतीनगर में "राष्ट्रीय ध्वजारोहण" करते हुए आदरणीय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) महोदया।

नवीन पूर्वाचल संदेश



दिनांक 29.07.2022 को कार्यालय महलेखाकार (लेखा एवं हक्दारी) द्वारा आयोजित "वार्षिक लेखें 2021-22 को अंतिम रूप प्रदान और प्रमाणीकरण विषय से संबंधित कार्यशाला" की कुछ झलकियाँ।



दिनांक 14 एवं 15 सितम्बर 2022 को पंडित दीनदयाल उपाध्याय इंडोर स्टेडियम, सूरत (गुजरात) में आयोजित हिन्दी दिवस समारोह 2022 एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के पावन अवसर की कुछ झलकियाँ।



नवीन पूर्वाचल संदेश

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

मेघालय, शिलांग - 793001

फैक्स संख्या : 0364-2223103

ई-मेल : agaameghalaya@cag.gov.in